(५७५०) विद्यालंकार

जो कर्णपुट हरि के गुनानुवाद नहीं सुनें हैं ते सर्पन के से बिले हैं और जो हरि के गुणानुवाद नो न गावें वह जिह्वा मेंडका की सी है २०
सुंदर जरकसी पाग मुकट करसे बिन हू सिर हैं और जो हरि कूं नन मैं नौं केवल भार ही हैं हाथन मैं सुंदर सोने के प्रमेंठ माचू
डा हैं पर जो हरि की सेवा न करैं तौं वे मुरदा के से हाथ हैं २१ जिन नैंनन सों हरि की प्रतिमा न देषि ये ते नेत्र मोरपंष देषत ही के हैं
जिन पावन सों हरि के क्षेत्रन मैं न जाय तिन कों वृक्षन कौं सो जन्म है २२ जो पुरुष भगवान के चरनरज कौं स्पर्श न करैं वो हू जीव
मरी मुरदा है और श्री कृष्णचरण की प्रसादी तुलसी कौ गंध न जानै ली नी सो ऊ सास लेत मरयों २३ हे सूत वह हृदय पथर है ते

बिले बतोरुक्रमविक्रमान्ये न शृण्वतः कर्णपुटे नरस्य जिह्वासती दार्दुरिकेव सूत न चोपगायत्युरुगायगाथाः २० भारः
परं पट्टकिरीटजुष्टमप्युत्तमांगं न नमेन्मुकुंदं शावौ करौ नो कुरुतः सपर्यां हरेर्लसत्कांचनकंकणौ वा २१ बर्हायिते ते न
यने नराणां लिंगानि विष्णोर्न निरीक्षतो ये पादौ नृणां तौ द्रुमजन्मभाजौ क्षेत्राणि नानुव्रजतो हरेर्यौ २२ जीवञ्छवो
भागवतांघ्रिरेणुं न जातु मर्त्योऽभिलभेत यस्तु श्रीविष्णुपद्या मनुजस्तुलस्याः श्वसञ्छवो यस्तु न वेद गंधं २३ तदश्म
सारं हृदयं बतेदं यद्गृह्यमाणैर्हरिनामधेयैः न विक्रियेताथ यदा विकारो नेत्रे जलं गात्ररुहेषु हर्षः २४ अथाभिधेह्यं
ग मनोऽनुकूलं प्रभाषसे भागवतप्रधानः यदाह वैयासकिरात्मविद्याविशा
रदो नृपतिं साधु पृष्टः २५ इति श्रीभागवते द्वितीयस्कंधे तृतीयोध्यायः ३ सूत उवाच वैयासकेरिति वचस्तत्त्वनिश्चयमा
त्मनः उपधार्य मतिं कृष्णे औत्तरेयः सतीं व्यधात् १ आत्मजायासुतागारपशुद्रविणबंधुषु राज्ये चाविकले नित्यं विरूढां मम

कठोर है जो नाम सुनि विकार कौं न प्राप्ति होय और जब विकार होइ तब नेत्रन मैं जल अंगन मैं रोमांच होत है २४ ताते हे सूत हरि
कथा कहौं तुम मन के अनुकूल कहौगे और भागवतन मे मे मोसहौ आत्मविद्या मैं निपुण श्री शुकदेवजी को राजा ने पूछो औ
उन ने जो कह्यो सो ही कहौ २५ इति श्री द्वितीयस्कंधे तृतीयोध्यायः ३ ताते उत्तम स्वरूप को जामें निश्चय ऐसो श्री सुकदेवजी
को वचन सुनि राजा परीक्षत श्रीकृष्ण विषै उज्ज्वल गावत भयो १ और देह स्त्री बेटा घर हाथी घोड़ा द्रव्य भाई बंधु निःकंटक राज्य इन मैं जो

हे सौनकजी तुम मोसों पूछो सोई बात राजा परीक्षत पूछत भयो श्रीशुकदेवजीसों श्रीकृष्णप्रभाव सुनिवे में श्रद्धा जाकें बढी बडो जाको
मन ३ अपनी मृत्यु जानि त्रैवर्ग जो कर्म ताहि त्याग वासुदेव भगवान विषे दृढ आत्मभावकों प्राप्त भयो यह पूछत भयो ४ हे ब्रह्मन तुम सर्वज्ञ
हो तातें तुम्हारो भलो वाक्य है जो तुम हरिकि कथा कहो हो ता मे मेरे हृदय को अंधकार जात है ५ सो मैं और हू जानो चाहु हूं जैसें भगवान अप
नी माया करि औरनको दुर्वितर्क्य ऐसो विश्व रचावै जैसें ६ वह अनंत है शक्ति जाकी ऐसो भगवान जा जसकों अंगीकार करि जैसें जा विश्व
को पालन करे है जैसें संहार करे है सो कहो ७ और जैसें भगवान क्रीडा करि या विश्वकों करे है ब्रह्मादिरूप धरि विविध सृष्टि करे है

यत्पृच्छसे ममेवार्थं यन्मां पृच्छति सत्तमः कृष्णानुभावश्रवणे श्रद्धधानो महात्मनः ३ संस्थां विज्ञाय संन्यस्य कर्म त्रैवर्गिकं
च यत् वासुदेवे भगवति आत्मभावं दृढं गतः ४ राजोवाच समीचीनं वचो ब्रह्मन् सर्वज्ञस्य तवानघः तमो विशीर्यते
मह्यं हरेः कथयतः कथां ५ भूय एव विवित्सामि भगवानात्ममायया यथेदं सृजते विश्वं दुर्विभाव्यमधीश्वरैः ६ य
यथा गोपायति विभुः यथा संयच्छते पुनः यां यां शक्तिमुपाश्रित्य पुरुशक्तिः परः पुमान् आत्मानं क्रीडयन्क्रीडन्करो
ति विकरोति च नूनं भगवतो ब्रह्मन् हरेरद्भुतकर्मणः दुर्विभाव्यमिवाभाति कविभिश्चापि चेष्टितं ८ यथा गुणांस्तु प्रकृ
तेर्युगपत्क्रमशोपि वा बिभर्ति भूरिशस्त्वेकः कुर्वन्कर्माणि जन्मभिः ९ विचिकित्सितमेतन्मे ब्रवीतु भगवान्यथा शाब्दे
ब्रह्मणि निष्णातः परस्मिंश्च भवान्खलु १० सूत उवाच इत्युपामंत्रितो राज्ञा गुणानुकथने हरेः हृषीकेशमनुस्मृत्य प्र
तिवक्तुं प्रचक्रमे ११

सो कहो अद्भुत जाके कर्म ता भगवान की लीला बडे बडे कविनहूंके आछी तरह जानवे में नहीं आवै ८ जो एक ही भगवान ब्रह्मा
दि अवतार धरि कर्म करति माया के गुणनकों एकवार तो ग्रहण करे है सो क्रमसों कहो ९ यह मेरो जो संदेह है ताहि भली
भाति आप कहो तुम शब्दब्रह्म हू में निपुण हो और परब्रह्म हू में हो १० हे सौनक ऐसें हरि के गुणानुवाद करवे में जब राजा ने
प्रेरे तब हरि कों स्मरण करि श्रीशुकदेवजी कहिवे कों प्रारंभ करत भये ता में पहिलें मंगलाचरण करे है ११

श्रीशुकदेवजी कहै हैं अपरिमित जाकी महिमा ता परमात्मा कों मेरो प्रणाम है याविश्व की उत्पत्ति पालन नास के लीयें ब्रह्मा विष्णु म
हेस रूप जानैं धारण किये और सब देहधारीन के भीतर विराजे हैं पर जाकों मार्ग काहू के लखवे में न ही आवे है फिर प्रभु कों मेरो दं
डवत हैं जो साधन के दुःख काटिवे वारे हैं दुष्टन के नास करवे वारे हैं और जे पुरुष परमहंस आश्रम में स्थित हैं तिन को मोक्ष के
देवे वारे तिन्हें प्रनाम है १३ तुम कों प्रणाम है जो भक्तन के पालन हारे और कुयोगीन कों जिन की दिशा हू न ही जानी जातें और
जाकें न कोई समान न अधिक ऐसें ऐश्वर्य करि अपने स्वरूप जो ब्रह्म तामें रमण करो हो ता तुम कों प्रणाम है १४ जा हरि को कीर्तन

श्रीशुक उवाच: नमः परस्मै पुरुषाय भूयसे सदुद्भवस्थाननिरोधलीलया गृहीतशक्तित्रितयाय देहिनामंतर्भवाया
नुपलक्ष्यवर्त्मने १२ भूयो नमः सद्वृजिनच्छिदे ऽसतामसंभवायाखिलसत्त्वमूर्तये पुंसां पुनः पारमहंस्य आश्रमे व्य
वस्थितानामनुमृग्यदाशुषे १३ नमो नमस्ते ऽस्त्वृषभाय सात्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनां निरस्तसाम्यातिश
येन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः १४ यत्कीर्तनं यत्स्मरणं यदीक्षणं यद्वंदनं यच्छ्रवणं यदर्हणं लोकस्य
सद्यो विधुनोति कल्मषं तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः १५ विचक्षणा यच्चरणोपसादनात्संगं व्युदस्योभयतोंतरा
त्मनः विंदंति हि ब्रह्मगतिं गतक्लमास्तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः १६ तपस्विनो दानपरा यशस्विनो मनस्वि
नो मंत्रविदः सुमंगलाः क्षेमं न विंदंति विना यदर्पणं तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः १७

जा को स्मरण दर्शन प्रमाण जाकों श्रवण पूजन लोकन कों तत्काल पापन कों दूरि करै है उज्ज्वल जा को जस ता हरि कों प्रणाम है १५
विवेकी जाके चरणारविंद भजन या लोक परलोक की और आसक्ति छोड उभय द्वारा तें निर्लेप ब्रह्म गति कों प्राप्ति होतें ऐसे भगवान उज्ज्व
ल जाके यश ता कों प्रणाम है १६ बडे बडे तपस्वी दाता यशीले मंत्रवेत्ता और मंगलकर्म करने वारे जाकें अपने करे
विना कल्याण कों नहीं प्राप्त हो है ऐसे उज्ज्वल जाके यश ता हरि कों प्रणाम है १७ श्री कृष्णाय नमो नमः हरे कृष्णाय नमः ॥ १७ ॥

किरातहूण अंध्र पुलिंद पुल्कस अभीर कंक यवन खस इन आदि दै और जो वडे पाप जोनें ते जाहूं के भक्त भागवतनकों आश्रयले सुद्ध होतें
हैं ता प्रभु कों मेरी प्रणाम है १८ सोएक भगवान आत्मवेतानके आत्मा ईश्वर त्रयीमय धर्ममय तपोमय निःकपट ब्रह्मा महादेवादिक
नके तर्क मा कों योग्य है स्वरूप जाको असे भगवान मोपे प्रसन्न होहु १९ जो भगवान लक्ष्मीके पति यज्ञपति प्रजापति बुद्धनकेपति लोकपति
पृथ्वीपति अंधक वृष्णि यादवनकेपति है और गति है साधुनके पति सो मोपे प्रसन्न होहु २० जा भगवान के चरणारविंद कों जो ध्यान सोई स
माधि ताकरि निर्मल जो बुद्धि ताकरकें कवीश्वर आत्मा स्वरूप देखें हैं और यथारुचि कहेते हैं सो भगवान मुकुंद मोपे प्रसन्न होहु २१

किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसा आभीरकंकायवनाः खसादयः येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाः शुद्ध्यंति तस्मै प्रभविष्णवे नमः १८
सएष आत्मात्मवतामधीश्वरस्त्रयीमयो धर्ममयस्तपोमयः गतव्यलीकैरजशंकरादिभिर्वितर्क्यलिंगो भगवान्प्रसीदतां १९
श्रियः पतिर्यज्ञपतिःप्रजापतिर्धियांपतिर्लोकपतिर्धरापतिः पतिर्गतिश्चांधकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतांमे भगवान्सतांगतिः
यदंघ्र्यभिध्यानसमाधिधौतया धियानुपश्यंति हि तत्त्वमात्मनः वदंति चैतत्कवयो यथारुचं समे मुकुंदो भगवान्प्रसीदतां २१
प्रचोदिता येन पुरा सरस्वती वितन्वताजस्य सतीं स्मृतिं हृदि स्वलक्षणा प्रादुरभूत्किलास्यतः समे ऋषीणामृषभः प्रसीदतां २२
भूतैर्महद्भिर्य इमाः पुरोविभुर्निर्माय शेते यदमूषु पूरुषः भुंक्ते गुणान्षोडश षोडशात्मकः सोलंकृषीष्ट भगवान्वचां
सि मे २३ नमस्तस्मै भगवते व्यासायामिततेजसे पपुर्ज्ञानमयं सौम्या यन्मुखांबुरुहासवं २४

जं त्वकों सुहृद स्मृती विस्तारत जो भगवान् तानें सरस्वती प्रेरी तब वेदलक्षणा वाणी ब्रह्मा के मुखतें प्रगट भई सो ज्ञानदा
ता ज्ञानमें श्रेष्ठ भगवान मोपे प्रसन्न होहु २२ जो भगवान इन महाभूतन करि देहन कों रचि इनमें विराजें हैं सो इंद्री है गुण
नकों भोगे हैं सो प्रभु मेरी वानी अलंकृत करो जो श्रोतानकों प्रिय लगें २३ ता व्यासस्वरूप भगवान् वासुदेव कों मेरी प्रणा
म है जाके मुखकमलमें तें निकसो ज्ञानमय मकरंद ताहि भक्तजन पान करत भये २४

हेराजन् यहीप्रश्ननारदनैंब्रह्मासोंकीयौं जोनारायणनेंब्रह्माकेआगेंकह्योसोब्रह्मानारदकेआगेंकहतभयो २५ इतिश्री
भागवतेद्वितीयस्कंधेचतुर्थोध्याय: ४ नारदजीब्रह्मासोंकहैंहैं हेदेवनकेदेव हेभूतभावनसवकेवडे आत्मस्वरूपकौं
दिषायकेवारोंजोज्ञानसोमेरेआगेंकहौ १ जाकरयहविश्वप्रकासकरैहैं जाकेआश्रयतैं जानेंजोजामेंलीनहोहैं तात
त्वकौंमेरेआगेंकहौ २ जोविश्वहोइगईहोंनहारवर्तमानसवतुमजानौहौ जैसेंहाथमेंआमरो ऐसेंज्ञानकरतुमनेनिश्चै
करलीयौहै ३ सोजानेतुमकौंविज्ञानतैं ताकेआश्रय जाकेआधीनयहस्वरूप अकेलेही पंचमहाभूतनकरि अपनीमाया

एतदेवात्मभूराजन्नारदायविपृच्छते वेदगर्भोभ्यधात्साक्षात्यदाहहरिरात्मनः २५ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेद्वितीयस्कंधेचतुर्थोध्याय: ४ श्रीनारदउवाच: देवदेवनमस्तेस्तुभूतभावनपूर्वज तद्विजानीहियज्ज्ञानमात्मत
त्वनिदर्शनं १ यद्रूपंयदधिष्ठानंयतःसृष्टमिदंप्रभो यत्संस्थंयत्परंयच्चतत्तत्त्वंवदतत्वतः २ सर्वंह्येतद्भवान्वेद
भूतभव्यभवत्प्रभुः करामलकवद्विश्वंविज्ञानावसितंतव ३ यद्विज्ञानोयदाधारोयत्परस्त्वंयदात्मकः एकःसृ
जसिभूतानिभूतैरेवात्ममायया ४ आत्मभावभावयसेतानिनपराभावयन्स्वयं आत्मशक्तिमवष्टभ्यऊर्ण
नाभिरिवाक्लमः ५ नाहंवेदपरंत्वस्मिन्नापरंनसमंविभो नामरूपगुणैर्भाव्यंसदसत्किंचदन्यतः ६ सत्व
वानचरद्घोरंयत्तपःसुसमाहितः तेनखेदयसेनस्त्वंपराशंकांप्रयच्छसि ७ एतन्मेपृच्छयःसर्वंसर्वज्ञसकलेश्व
रः विजानीहियथैवेदमहंबुध्येऽनुशासितः ८

तेंसव प्राणीनकौंजैसेंसजोहोसोकहौं ४ पराभवरहितअपनेहीमेंयाविश्वकौंपालनकरोंहो अपनीशक्तिकौंआश्रयकरिजैसें
मकरीजालकौंसरजैहै ५ याविश्वमेंउत्तममध्यमअधमजोनामरूपगुणनकरिसिद्धहोहै सोसवमें औरजैनतीजानतेसव
तुमतेंहीहोहै यहजानूंहूं ६ सोतुमइतनेवडेहोइकैं घोरतपकरोंहो ताकरहमकौंवडोंखेद औरसंकाउपजाओहो तुमतेंकौं
नजायनजोहौ ७ हेसर्वज्ञसवकेईश्वर यहमैंपूछूंहूं सोसवमेरेआगेंसिषाएकेंकहो जैसेंमेंअच्छीतरेजानूं ८ रूपमय:॥

ब्रह्मानारदजीसोंकहैहैं हेपुत्रयतनेरोंमनलोंसंदेहतें जोभगवतचरित्रकेंकहिवेमेंमोहिप्रेरयो ९ हेनारदजोतूमोहिईश्वरकहैहै
सोउपरतेरोंवचनसांचकहनतो जोजानेमोतेंपरेजोईश्वरमोहिनहीजान्योहैं यातेमेंतुमनमेंवडोभयो १० जाभगवाननेंअपनी
कांतिकरिप्रकाशीविश्वतातीमेंप्रकाशकरतहूं जैसेंसूर्य्यअग्निचंद्रमा तारागणनक्षत्रग्रहप्रकाशकूंप्रकाशैहै ११ ताभगवानवा
सुदेवकोंमेरीप्रणामहैं जाकीमायाकरमोहिजगगुरुकहैहैं वहीसवकोगुरु १२ जोमायापरमेश्वरकेआखिननआगेंठाढेहोतमें
लज्जापावैहै तामायाकरिमोहितदुर्बुद्धिमेमेरीऐसेंकहैहैं १३ महाभूतकर्मकालस्वभावजीवएवास्तवतेंदीषियेंतोवासुदेवतेंभि

ब्रह्मोवाच: सम्यक्कारुण्यकस्येदंवत्सतेविचिकित्सितं यदहंचोदितःसौम्यभगवद्वीर्य्यदर्शने ९ नानृतंतवतच्चापि न
यथामांप्रब्रवीषिभो: अविज्ञायपरंमत्तएतावत्त्वंयतोहिमे १० येनस्वरोचिषाविश्वंरोचितंरोचयाम्यहं यथार्कोग्नि
र्यथासोमोयथर्क्षग्रहतारका: ११ तस्मैनमोभगवतेवासुदेवायधीमहि यन्माययादुर्ज्जययामांवदंतिजगद्गुरुं १२
विलज्जमानयायस्यस्थातुमीक्षापथेमुया विमोहिताविकत्थंतेममाहमितिदुर्धिय: १३ द्रव्यंकर्मचकालश्च
स्वभावोजीवएवच: वासुदेवात्परोब्रह्मन्नचान्योर्थोस्तितत्वत: १४ नारायणपरावेदादेवानारायणांगजा:
नारायणपरालोकानारायणपरामखा: १५ नारायणपरोयोगोनारायणपरंतप: नारायणपरंज्ञानंनाराय
णपरागति: १६ तस्यापिद्रष्टुरीशस्यकूटस्थस्याखिलात्मन: सृज्यंसृजामिसृष्टोहमीक्षयैवाभिचोदित: १७ स
त्वंरजस्तमइतिनिर्गुणस्यगुणास्त्रय: स्थितमार्गनिरोधेषुगृहीतामाययाविभो १८

न्नती १४ वेदनहूकेतात्पर्य्यःगोचरनारायणहीहैं देवताहूनारायणकेअंगतेभएहैं लोकहूनारायणकेअंगतेभएहैं यज्ञहू
नारायणकेआराधनकेलीयेंकरीयेंहैं १५ योगहूनारायणकेलीयेंकरीयेंहैं तपहूनारायणपरायणहैं १६ नारायणजोहैसोपर
मज्ञानहै नारायणपरमगति: सोद्रष्टाईश्वरनिर्विकारसर्वात्माकीविश्वकरिवाकीदृष्टिकरिप्रेरयोमेंसृज्यहूंमेंवाहरिकौसृज्योहौं १७
सत्वरजतमएनिर्गुनकेतीनगुनहैं सोयाविश्वकीउत्पत्तपालननाशकेसमेंमायाकरिग्रहणकरेहैं १८ श्रीकृष्णायनमः

अधिभूत अध्यात्म अधिदैव इनके जो भाव तामें महाभूत देवतामें आश्रय होइ येती तो गुणतें तो जीव नित्य मुक्त परंतु मायाविषै जब
होइहै तब गुणयाको बांधैहैं १९ सएस भगवान लिंगें सो इन तीन गुणन करिकैं लषियेहै स्वरूप जाको असे भगवान मेरे तेरे सबके इश्व
रहैं २० वाहरिकें जब बहवेकी इछा भई जब मायाके नियंता अपनी मायाकरि अपने में यदृच्छा करिकें प्राप्त जो काल कर्म स्वभाव ताहि
अंगीकार करत भये २१ कालतें गुणक्षोभ भयो स्वभावतें रूपांतर प्रति और कर्मतें महतत्वको जन्म होत भयो २२ महतत्व जब वि
कारको प्राप्ति भयो तब तमो गुण जामें प्रधान असो महाभूत इंद्रिय देवता रूप अहंकार होत भयो २३ सो अहंकार जब विकारको प्राप्ति

कार्यकारणकर्तृत्वे द्रव्यज्ञानक्रियाश्रयः बध्नंति नित्यदा मुक्तं मायिनं पुरुषं गुणाः १९ स एष भगवान् लिंगैस्त्रिभिरेव
रधोक्षजः स्वलक्षितगतिर्ब्रह्मन् सर्वेषां मम चेश्वरः २० कालं कर्म स्वभावं च मायेशो मायया स्वया आत्मन् यदृच्छ
या प्राप्तं विबुभूषुरुपाददे २१ कालाद्गुणव्यतिकरः परिणामः स्वभावतः कर्मणो जन्म महतः पुरुषाधिष्ठिताद्भूत २२
महतस्तु विकुर्वाणाद्रजःसत्वोपबृंहितात् तमःप्रधानस्त्वभवद्द्रव्यज्ञानक्रियात्मकः २३ सोहंकार इति प्रोक्तो विकुर्वन् स
मभूत्त्रिधा वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेति यद्भिदा द्रव्यशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिरिति प्रभो २४ तामसादपि भू
तादेर्विकुर्वाणादभून्नभः तस्य मात्रा गुणः शब्दो लिंगं यद्द्रष्टृदृश्ययोः २५ नभसोथ विकुर्वाणादभूत्स्पर्शगुणोनिलः प
रान्वयाच्छब्दवांश्च प्राणओजःसहोबलं २६ वायोरपि विकुर्वाणात्कालकर्मस्वभावतः उदपद्यत तेजो वै रूपवत्स्पर्श

यो तब तीन प्रकारको भयो सात्विक राजस तामस इन भेदन करि २४ महाभूत में जाकी शक्ति और इंद्रियन में और देवतान मे
जाकी शक्ति २५ तामस अहंकार जब विकारकों प्राप्ति भयो तब वातें आकाश भयो ताको सूक्ष्म रूप और असाधारण गुण शब्द है जो
सब्द द्रष्टा दृश्यको बोधक है २६ आकाश जब विकारको प्राप्ति भयो तब वातें स्पर्श जामें गुण असो पवन भयो सो वामें कारणता करि
आकाश अनुकूल हैं यातें शब्दयुक्त हैं और प्राण ओज सह बल रूप हैं २७ कालकर्मस्वभावतें पवनतत्व विकारको प्राप्ति भयो तब वातें ते

तेजजविकारकों प्राप्ति भयों तववातें रसात्मक जल भयों कारणकुं अनुसृत है कार्य में यातें शब्द स्पर्श रूप रस गुण है जल में २९ जलज
वविकारकों प्राप्ति भयों तववातें गंधवती पृथ्वी भई सो वामें कारण नहके गुण हैं यातें सब्द स्पर्श रूप रस गंध पांचों गुण हैं ३० सात्विक
अहंकारते मन भयों और इंद्रीनके अधिष्ठाता दशदेवता तें सो भये ऐसा पवन सूर्य प्रचेता अश्विनीकुमार अग्नि इंद्र विष्णु उ
पेंद्र मित्र प्रजापति ३१ राजस अहंकार जवविकारकों प्राप्ति भयों तववातें दशइंद्री भई ज्ञानइंद्री कर्मेंद्री बुद्धि प्राण ये राजस अ
हंकारतें भयों ३२ श्रवण त्वचा घ्राण दृष्टि जिह्वा ए तो ज्ञानेंद्री वाणी भुजा मेढ्र अंघ्रि पायु ए पांच कर्मेंद्री एसव न्यारे न्यारे हैं यातें भ

विषेसस्तु विकुर्वाणात्तासीदंभोरसात्मकं रूपवत्स्पर्शवच्चांभो घोषवच्च परान्वयात् २८ विशेषस्तु विकुर्वाणादंभसो
गंधवानभूत् परान्वयाद्रसस्पर्शशब्दरूपगुणान्वितः २९ वैकारिकान्मनो जज्ञे देवा वैकारिकाद्दश दिग्वातार्कप्रचे
तोश्विवह्नींद्रोपेंद्रमित्रकाः ३१ तैजसात्तु विकुर्वाणादिंद्रियाणि दशाभवन् ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिर्बुद्धिः प्राणश्च
तैजसौ श्रोत्रं त्वग्घ्राणदृग्जिह्वावाग्दोर्मेढ्रांघ्रिपायवः ३२ यदैतेऽसंगता भावा भूतेंद्रियमनोगुणाः यदायतननि
र्माणे न शेकुर्ब्रह्मवित्तम ३३ तदा संहत्य चान्योन्यं भगवच्छक्तिचोदिताः सदसत्त्वमुपादाय चोभयं ससृजुर्ह्यदः ३४
वर्षपूगसहस्रांते तदंडमुदके शयम् कालकर्मस्वभावस्थो जीवोऽजीवमजीवयत् ३५ स एव पुरुषस्तस्मादंडं निर्भिद्य
निर्गतः सहस्रोर्वंघ्रिबाह्वक्षः सहस्राननशीर्षवान् ३६ यस्येहावयवैर्लोकान्कल्पयंति मनीषिणः कट्यादिभिरधः स

तई ही मन गुणकों ईह यात्र स्तोंदर चिवेमें समर्थ न भयो ३३ तव भगवान की शक्ति के प्रेरे परस्पर मिल कर प्रधान गुणभावकों अंगी
कर करि समष्टिरूप पकूं सज्जत भये ३४ वर्ष सहस्र के सहस्र ताके अंत में काल कर्म स्वभाव में स्थित जो परमात्मा सो जल में सोवत
जो जड अंड ताहि चेतन्य करत भये ३५ सोई पुरुष वा अंड में ते भेदि के निकसो हजारन जाके जंघा चरण भुजा नेत्र अरु सहस्र मुख अरु सि
रजाके ३६ जाहरिकी के अंगन करि विवेकी लोकनकी लोकरचना करै हैं कटि ते आदि देनीचिले सात अंगन करि सात लोक भये उप

पुरुषको मुख ब्राह्मण है क्षत्री श्रीभुजा है जंघानते वैश्य औरपाउनते सूद्र होतभयो ३८ भूर्लोक हरिके पावनकरि भयो है भुवलो
कवाकी नाभिते हृदयकर स्वर्गलोक वक्षस्थलकर महर्लोक रच्यो है ३९ ग्रीवामे जनलोक रच्यो है तपलोक दोउस्तननते सिरनकर
सत्यलोक रच्यो है और वैकुंठलोक नित्यही है ४० हरिकी कटिमेंते अतललोक रच्यो है उरूनमे वितल घोंटूनमे सुतल घोंटूनके
नीचे तलातल ४१ महातल टकुनानकरके रच्यो है रसातल पगनके पाउनते रच्यो है पाउनके नीचे पाताल रच्यो है ऐसे लोकमय भ
गवान ही है ४२ कोई त्रिलोकी ही माने है तिनके मतिकरि कहे है भूर्लोक हरिके पाउनकर रच्यो है भुवर्लोक नाभिते है स्वर्गलोक

पुरुषस्य मुखं ब्रह्म क्षत्रमेतस्य बाहवः ऊर्वोर्वैश्यो भगवतः पद्भ्यां शूद्रो व्यजायत ३८ भूर्लोकः कल्पितः पद्भ्यां भुवर्लोकोऽस्य
नाभितः हृदा स्वर्लोक उरसा महर्लोको महात्मनः ३९ ग्रीवायां जनलोकोऽस्य तपोलोकः स्तनद्वयात् मूर्द्धभिः सत्यलोक
स्तु ब्रह्मलोकः सनातनः ४० तत्कट्यां चातलं क्लृप्तमूरुभ्यां वितलं विभोः जानुभ्यां सुतलं शुद्धं जंघाभ्यां तु तलातलं ४१
महातलं तु गुल्फाभ्यां प्रपदाभ्यां रसातलं पातालं पादतलत इति लोकमयः पुमान् ४२ भूर्लोकः कल्पितः पद्भ्यां भुवर्लोको
ऽस्य नाभितः स्वर्लोकः कल्पितो मूर्द्ध्ना इति वा लोककल्पना ४३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वितीयस्कंधे पंचमोऽध्यायः ५
ब्रह्मोवाच वाचां वह्नेर्मुखं क्षेत्रं छंदसां सप्त धातवः हव्यकव्यामृतान्नानां जिह्वा सर्वरसस्य च १ सर्वासूनां च वायोश्च
तन्नासे परमायणे अश्विनोरोषधीनां च घ्राणो मोदप्रमोदयोः २ रूपाणां तेजसां चक्षुर्दिवः सूर्यस्य चाक्षिणी कर्णौ दि
शां च तीर्थानां श्रोत्रमाकाशशब्दयोः तद्गात्रं वस्तुसाराणां सौभगस्य च भाजनं ३

माथे ते ऐसे तीन लोक रचना है ४३ इति श्रीभागवते द्वितीयस्कंधे पंचमोध्यायः ५ हे नारद वाणी और अग्नि इनको भगवानको
मुख उत्पत्तिस्थान है छंदनको हरिके सातोंधातु उत्पत्तिस्थान है देवता पितर मनुष्यनको अन्न और रस ए भगवानकी जिह्वाते भये
हैं १ सवप्राण और पवन इनको भगवानकी नासिका आश्रय है अश्वनीकुमार औषधी मोद प्रमोद ये भगवानके घ्राणते भए
हैं २ रूप और तेज इनको चक्षुइंद्रीय आश्रय है स्वर्ग और सूर्य इनको नेत्रगोलक आश्रय है दिशा और तीर्थ ए हरिके कर्णते भ
ए हैं आकाश और शब्द ये श्रवणइंद्रीते भये हैं वस्तुनके जे सारो सतिनको और सौभाग्यको हरिको सरीर स्थान है ३

स्पर्श पवन और यज्ञ इनकौ त्वचा स्थान है वृक्षजातिन (कौ) हरिके केश डाढी मूछन ख आश्रय हैं मेघनकौ केश बिजुरी शीशनि शिलालोह
हाथ पाउन के नख हैं तै पालन करवेवारे लोकपालन कौ भुजा आश्रय हैं ५ भूर्भुवस्वर्ग ए हरिके पाउनकौ धरिबो और क्षेम सरण
सब कामना बर इनकौ हरिकौ चरण स्थान है ६ जल शुक्र सर्ग पर्जन्य प्रजापति इनकौ पुरुषकौ शिश्न स्थान है संतानार्थ भोग
तामें जो आनंद ताकौ उपस्थ इंद्री स्थान है ७ यम मित्र देवता और मलत्याग इनकौ पायु इंद्रीय स्थान है हिंसा निर्ऋति राक्षस औ
र मृत्यु निरय इनकौ हरिकौ गुदा स्थान है पराभव और अधर्म तमोगुण इनकौ पृष्ठभाग उत्पत्ति स्थान है नद और नदी इनकौ

त्वगस्य स्पर्शवायोश्च सर्वमेधस्य चैव हि रोमाण्युद्भिज्जजातीनां यैर्वा यज्ञस्तु संभवः ४ केशश्मश्रुनखान्यस्य शिला
लोहाभ्रविद्युतां बाहवो लोकपालानां प्रायशः क्षेमकर्मणां ५ विक्रमो भूर्भुवः स्वश्च क्षेमस्य शरणस्य च सर्वका
मवरस्यापि हरेश्चरणमास्पदं ६ अपां वीर्यस्य सर्गस्य पर्जन्यस्य प्रजापतेः पुंसः शिश्न उपस्थस्तु प्रजात्यानं
दनिर्वृतिः ७ पायुर्यमस्य मित्रस्य परिमोक्षस्य नारद हिंसाया निरृतेर्मृत्योर्निरयस्य गुदः स्मृतः ८ पराभूतेरध
र्मस्य तमसश्चापि पश्चिमः नाड्यो नदनदीनां तु गोत्राणामस्थिसंहतिः ९ अव्यक्तरससिंधूनां भूतानां निधन
स्य च उदरं विदितं पुंसो हृदयं मनसः पदं १० धर्मस्य मम तुभ्यं च कुमाराणां भवस्य च विज्ञानस्य च सत्वस्य
परस्यात्मा परायणं ११ अहं भवान् भवश्चैव त इमे मुनयोऽग्रजाः सुरासुरनरा नागाः खगा मृगसरीसृपाः १२
गंधर्वाप्सरसो यक्षा रक्षोभूतगणोरगाः पशवो पितरः सिद्धा विद्याध्राश्चारणा द्रुमाः १३

नाडी आश्रय हैं पर्वत अस्थन ते भए हैं ९ प्रधान रस और समुद्र प्राणीन कौ निधन इनकौ हरिकौ उदर स्थान है हरि
कौ हृदय अस्मदादिक के लिंग कौ शरीर कौ स्थान है १० धर्म मैं तू सनकादिक महादेव विज्ञान सत्व इनकौ हरिकौ चित्त आ
श्रय है ११ हे नारद तू शिव और एते रे बडे भैया मुनि देवता असुर मनुष्य नाग खग मृग जंगम सब हरि ही ते हो हे १२
गंधर्व अप्सरा यक्ष राक्षस रक्ष भूतगण उरग पशु पितर सिद्धि विद्याधर चारण वृक्ष सब हरि ही ते भए हैं ॥१३॥ श्री ॥

और नाना प्रकार के जीव जल स्थल आकासवासी ग्रह नक्षत्र केतु तारा बिजुरी गरजनि सब हरि ही को स्वरूप है १४ जो होइ गयो
होनहार वर्तमान सब यह हरि कोई स्वरूप है ताही करि विश्व आवृत्त है और सब तें अधिक व्यापि करि विराजै है १५ जैसे यह सूर्य प
हलें अपने मंडल कों प्रकास करि पीछे बाहिर प्रकास करै है ऐसें ही विराट देह कों प्रकास करि ब्रह्मांड के भीतर बाहर भगवान प्रका
स करै है सो अमृत अभय को ईश्वर है मरण धर्मी जो त्रैलोक्य पादि कताहि उलंघन करत भये १६ सो यह हरि की महिमा वडी अपा
र है भूरादि लोक है असे जाके पांउ सरीषे जे लोक तिनमें सब जीव रहै है १७ ए सब जीव त्रिलोकी में है और तीन्यो लोकन के उप

अन्ये च विविधा जीवा जलस्थलनभौकसः ग्रहर्क्षकेतवस्तारास्तडितः स्तनयित्नवः १४ सर्वं पुरुष एवेदं भूतं भव्यं
भवच्च यत् तेनेदमावृतं विश्वं वितस्तिमधितिष्ठति १५ स्वधिष्ण्यं प्रतपन् प्राणो बहिश्च प्रतपत्यसौ एवं विराजं प्र
तपंस्तपत्यंतर्बहिः पुमान् १६ सोमृतस्याभयस्येशो मर्त्यमन्नं यदत्यगात् महिमैष ततो ब्रह्मन् पुरुषस्य दुरत्य
या १७ पादेषु सर्वभूतानि पुंसः स्थितिपदो विदुः अमृतं क्षेममभयं त्रिमूर्ध्नोऽधायि मूर्द्धसु १८ पादास्त्रयो
बहिश्चासन्नप्रजानां य आश्रमाः अंतस्त्रिलोक्यास्त्वपरो गृहमेधो बृहद्व्रतः १९ सृती विचक्रमे विष्वक् सा
शनानशने उभे यदविद्या च विद्या च पुरुषस्तूभयाश्रयाः २० यस्मादंडं विराट् जज्ञे भूतेंद्रियगुणात्मकः
तद्द्रव्यमत्यगाद्विश्वं गोभिः सूर्य इवातपन् २१

र महर्लोक है ताके उपर जन तप सत्य इन तीन्यों नमें क्रम करि अमृत क्षेम अभय ए राषे हैं ए हरि के तीन चरण त्रिलोकी
ताते बाहिर होत है नैष्ठक ब्रह्मचारी वानप्रस्थ ये तीन रहिवे के स्थान है १८ त्रिलोकी के भीतर गृहस्थ कों स्थान है जातें ब्रह्म
चर्य रहित है १९ भोग कर्म्म के मार्ग ज्ञान भूत दोउ मार्ग दक्षिण उत्तर तिनें जीव सो पुरुष चलत भयो ए कर्म्म रूप
अविद्या एक विद्या साधन उपासन रूप ये दोउ मार्ग है पुरुष दोउन को आश्रय है २० जातें अंड भयो और भूत इंद्रिय
गुणात्मक विराट भयो सो ईश्वर किरननि करि सूर्य की सी नाई प्रकास करत विराट देह और अंड ताहि अतिक्रमन करत भये २१

हे नारद जब मैं प्रभु के नाभि कमल में ते भयो तब तिहारे के अंगन बिना कोई यज्ञ सामिग्री न देखत भयो २२ तिन सामग्रीन में यज्ञ के पशु
वनस्पति औषधी घृतादिक रस सुवर्ण लोह मृत्तिका जल देव पूजा भूमि वसंतादि काल सब तिहारे के अंगन करि रचे २३ ऋग्वेद य
जुर्वेद सामवेद चातुर्होत्र कर्म ज्योतिष्टोमादि नामधेय मंत्र दक्षिणा व्रत देवतान को उपदेश कर्म पद्धति ग्रंथ संकल्प प्रयुञ्ज
न सब अंगन करि रचे हैं २४ विष्णु क्रमादिक मति देवता ध्यान प्रायश्चित्त और जो कोयो सो तिहारो अर्पण ये सब सामग्री हरि

यदास्य नाभ्यान्नलिनादहमासं महात्मनः नाविदं यज्ञसंभारान् पुरुषावयवादृते २२ तेषु यज्ञस्य पशवः सव
नस्पतयः कुशाः इदं च देवयजनं कालश्चोरुगुणान्वितः २३ वस्तून्योषधयः स्नेहा रसलोहमृदो जलं ऋचो यजूं
षि सामानि चातुर्होत्रं च सत्तम नामधेयानि मंत्राश्च दक्षिणाश्च व्रतानि च देवतानुक्रमः कल्पः संकल्पस्त
न्त्रमेव च गतयो मतयश्चैव प्रायश्चित्तं समर्पणं पुरुषावयवैरेते संभाराः संभृता मया २५ इति संभृतसंभारः
पुरुषावयवैरहं तमेव पुरुषं यज्ञं तेनैवायजमीश्वरम् २६ ततस्ते भ्रातर इमे प्रजानां पतयो नव अयजन्
व्यक्तमव्यक्तं पुरुषं सुसमाहिताः २७ ततश्च मनवः काले ईजिरे ऋषयोऽपरे पितरो विबुधा दैत्या मनुष्याः क्रतु
भिर्विभुं २८ नारायणे भगवति तदिदं विश्वमाहितं गृहीतमायोरुगुणः सर्गादावगुणः स्वतः २९ सृजामि
तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक् ३०

के अंगन करि रची २५ ऐसें तिहारे के अंगन करि सामिग्री जानें रची सो मैं ता यज्ञ करिवाय यज्ञस्वरूप ही पूजत भयो २६ ताही छैं
ज्ञानकेपरि ये तेरे नो उभै याँ सावधान होइ यज्ञन करि तिहारे कौं पूजत भये जो तिहारे ईश्वर तेसि सिद्धि प्रगट है और ई द्वारि रूप करि व्यक्त है २७
ताही छैं समय पाय कें मनु और ऋषि पितर देवता दैत्य मनुष्य यज्ञन करि पूजत भए २८ या नारायण भगवान में यह सब वि
श्व रहै है तो निर्गुण परि माया करि बहुत गुण ग्रहण करे हैं २९ ब्रह्मा कहै हैं मैं तो उनकी आज्ञा सों या विश्व को सृजूं महादेव संहार
करे हैं विष्णुरूप ह्वै आप पालन करे हैं तीनों रूप धरवे वारे आपु ही है ३०

हे पुत्र यह जो तैंनें मोहि पूछ्यो सो कह्यो कार्य्यकारणात्मक विश्व हरितें न्यारो कछु है नहीं ३१ हे नारद जो मैंनें भक्ति हृदय करि ध्यान कियो है यातें वाणी मेरी कबहू झूंठी नहीं होइ मनकी गति हू झूंठी नहीं और इंद्री हू कुमार्ग में नहीं परें सो सब हरि को ही प्रभाव है ३२ सो मैं वेदमय तपोमय प्रजापतन को पूज्य पति निपुन योग में आरूढ ह्वा तिन जानत भयो जातें मेरो जन्म है तो और जो कहा तातें जानैंगो ३३ ता हरि के चरनन को मैं दंडोत करूं हूं जो सरणागति के संसार काटवे वारो मंगलन को देवे वारो चरन हैं और जैसें आकाश अपनो अंत नहीं पावैं ऐसें ही हरि हू अपने माया वैभव को अंत आपु नहीं पावे है और कोई कहा तें पावैगो ३४ जाके परमार्थ स्वरूप कों न मैं ना

इति तेऽभिहितं तात यथेदमनुपृच्छसि नान्यद्भगवतः किंचिद्भाव्यं सदसदात्मकं ३१ न भारती मेंऽग मृषोपलक्ष्यते न वै क्वचिन्मे मनसो मृषा गतिः न मे हृषीकाणि पतन्त्यसत्पथे यन्मे हृदौत्कंठ्यवता धृतो हरि ३२ सोऽहं समाम्नायमयस्तपोमयः प्रजापतीनामभिवंदितः पतिः आस्थाय योगं निपुणं समाहितस्तं नाध्यगच्छं यत आत्मसंभवः ३३ नतोऽस्म्यहं तच्चरणं समीयुषां भवच्छिदं स्वस्त्ययनं सुमंगलं यो ह्यात्ममायाविभवं स्म पर्य्यगात् यथा नभः स्वांतमथापरे कुतः ३४ नाहं न यूयं यदृतां गतिं विदुर्न वामदेवः किमुतापरे सुराः तन्मायया मोहितबुद्धयस्त्विदं विनिर्मितं चात्मसमं विचक्ष्महे ३५ यस्यावतारकर्माणि गायंति ह्यस्मदादयः न यं विदंति तत्त्वेन तस्मै भगवते नमः ३६ स एष आद्यः पुरुषः कल्पे कल्पे सृजत्यजः आत्मात्मन्यात्मनात्मानं संयच्छति च पाति च ३७ विशुद्धं केवलं ज्ञानं प्रत्यक् सम्यगवस्थितं सत्यं पूर्णमनाद्यंतं निर्गुणं नित्य
मद्वयम् ३८ ॥

हौं न तुम मन महादेव तो और देवता कहा जानेंगे ता परमेश्वर की माया करि मोहित हैं बुद्धि जिनकी ऐसें हम सब यह प्रभू की रची विश्व ताहि हू अपनी अपनी बुद्धि के अनुरूप जानै हैं सन्ही जानें तो और को उवाहि कहा ते जानेंगे ३५ जाके अवतार कर्मनको अस्मदादिक गावें है परि स्वरूप कर जाहि नहीं जानें ता भगवान को प्रणाम है ३६ सोई आदि पुरुष भगवान कल्प कल्प में अपने विषें अपने ही को अपन पें करि सृष्टि पालन संहार करै है उन व्यतिरिक्त कोई पदार्थ नहीं ३७ जो विशुद्ध केवल ज्ञान स्वरूप सर्वांतरजामी सम्यक् स्थिर सत्य पूर्ण न जिन को आदि न अंत निर्गुण नित्य अद्वैत है ३८ हरेंनमः ॥

हेनारद प्रशांत देह इंद्रिय मन जब होहैं तब वाहि विवेकी जानै हैं ऐसे हैं तो भगवान प्रमान परिदुष्ट न को तर्क न करि सिद्ध लहो इ
अंतरहित होहैं ३९ ता भगवान को पहिलो पुरुष अवतार हैं और काल स्वभाव प्रकृति हैं मन इ प्राकृति हैं और महाभूत सत्वा
दिगण अहंकार समष्टि शरीर विकार स्थावर जंगम सब हरि के ही स्वरूप हैं ४० मैं ब्रह्मा रुद्र विष्णु दक्षादिक प्रजापति और
तो ते आदि दे ऋषि स्वर्ग के पालक पाताल के पालक मनुष्य लोक के पालक सब हरि के ही स्वरूप हैं ४१ गंधर्व विद्याधर चार
ण यक्ष रक्ष उरग नाग न के नाथ जे ऋषीन में पितरन में श्रेष्ठ दैत्येंद्र सिद्धेश्वर दानवेंद्र सब हरि ही ते भए हैं ४२ और जे प्रेत

ऋषे विदंति मुनयः प्रशांतात्मेंद्रियाशयाः। यदा तदेवासत्तर्कैस्तिरोधीयेत विप्लुतं ३८ आद्योऽवतारः पुरुषः परस्य का
लः स्वभावः सदसन्मनश्च द्रव्यं विकारो गुण इंद्रियाणि विराट् स्वराट् स्थास्नु चरिष्णु भूम्नः ४० अहं भवो यज्ञ इमे प्र
जेशा दक्षादयो ये भवदादयश्च स्वर्लोकपालाः खगलोकपाला नृलोकपालास्तललोकपालाः ४१ गंधर्वविद्याध
रचारणेशा ये यक्षरक्षोरगनागनाथाः ये वा ऋषीणामृषभाः पितॄणां दैत्येंद्रसिद्धेश्वरदानवेंद्राः ४२ अन्ये च ये
प्रेतपिशाचभूतकूष्मांडयादोमृगपक्ष्यधीशाः यत्किंच लोके भगवन्महस्वदोजः सहस्वद्बलवत्क्षमावत् ४३ श्री
ह्रीविभूत्यात्मवदद्भुतार्णं तत्त्वं परं रूपवदस्वरूपं ४४ प्राधान्यतो यानृष आमनंति लीलावतारान्पुरुषस्य भूम्नः
आपीयतां कर्णकषायशोषाननुक्रमिष्ये त इमान्सुपेशान् ४५

और पिसाच भूत कुष्मांड जलजीव मृग पक्षि इन के राजा सब हरि ही ते भये हैं ४३ हे नारद जो तो तक हा ताई कहों जो ऐश्व
र्य युक्त तेज युक्त इंद्री मन की सामर्थ्य बलवान क्षमा युक्त शोभा कुकर्म में लज्जा संपत्ति बुद्धि इन करि युक्त हैं और अद्भुत वर्ण
और स्वरूपवान सो सब तुमहारे ही स्वरूप हैं और तुम रहित जो सो सब तुम्हारी ही विभूती हैं ४४ हे नारद जे हरि के शुद्ध सत्व लीला
वतार कान के श्रवण द्वारा मैल कें दूर करिवे वारे सुंदर जिन ने भक्त गावैं हैं तिन्है मैं तेरे आगें संक्षेप सों कहूं तू सुनि: ४५

इतिश्रीभागवतेद्वितीयस्कंधेषष्ठोध्यायः ६ जबपृथ्वीकेउधारकरिवेकेलीयेंउद्यतभएतबसर्वयज्ञमयीवाराहमूर्तिधारण
करिभीतरसमुद्रमेंजाइहिरण्याक्षकोंदंष्ट्राकरिऐसेंविदीर्णकरतभए जैसेंवज्रलेकेंइंद्रपर्वतकोंविदारीकरें १ एकयज्ञरूप
भएरुचिप्रजापतिकेंआकूतिमामेंयज्ञभगवानहोइदक्षिणाअपनीस्त्रीमेंसुयमनामादेवतानकोंउपजावतभए औरतिलोकी
कीवडीआरतिहरतभए तातेंस्वायंभूमनुनेंहरियहनामधार्यो २ कर्दमकेघरमेंदेवहूतीकेपेटतेंनौकन्याभई पीछेश्रीकपिल
देवजीभए जिनेंमाताकेआगेंआत्मस्वरूपकहोंजाकरदेवहूतीमनमेंमलीनकरवेवारी गुणसंगरूपकीचताहिधोइकरकपिल

इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद्वितीयस्कंधेषष्ठोध्यायः ६ श्रीब्रह्मोवाच यत्रोद्यतःक्षितितलोद्धरणायबिभ्रत्क्रौ
डींतनुंसकलयज्ञमयीमनंतः अंतर्महार्णवउपागतमादिदैत्यंतंदंष्ट्रयाद्रिमिववज्रधरोददार १ जातोरुचेरजन
यत्सुयमान्सुयज्ञआकूतिसूनुरमरानथदक्षिणायां लोकत्रयस्यमहतीमहरद्यदार्तिंस्वायंभुवेनमनुनाहरिरित्य
नूक्तः २ जज्ञेचकर्दमगृहेद्विजदेवहूत्यांस्त्रीभिःसमंनवभिरात्मगतिंस्वमात्रे ऊचेययात्मशमलंगुणसंगपंकमस्मि
न्विधूयकपिलस्यगतिंप्रपेदे ३ अत्रेरपत्यमभिकांक्षतआहतुष्टोदत्तोमयाहमितियद्भगवान्सदत्तः यत्पादपंकजप
रागपवित्रदेहायोगर्द्धिमापुरुभयींयदुहैहयाद्याः ४ तप्तंतपोविविधलोकसिसृक्षयामेआदौसनात्स्वतपसः
सचतुःसनोभूत् प्राक्कल्पसंप्लवविनष्टमिहात्मतत्वं सम्यग्जगादमुनयोयदचक्षतात्मन् ५

देवजूकेस्वरूपकोंप्राप्तिभई ३ एकदत्तात्रेयभए अत्रिनेंपुत्रकीकामनाकरतपकीनों तबप्रसन्नहोयहरिनेंकहीवरमागि
तबवानेंमागोतुमसारिखोपुत्रहोइ तबहरिनेंकहीमेंनेंअपनपोंदीनों तातेंतेदत्तात्रेयभये जाकेचरणारविंदमकरंदकरिप
वित्रजिनकेदेह ऐसेंयदुसहस्त्रबाहतेंआदिदें यालोकपरपरलोककीसिद्धिमुक्तितादिप्राप्तिभये औरहेनारदआगेंमें
विविधलोकसृजवेकेलीयेंतपकीयो सोवातपकेंअर्पणकरतें मेरेवामाचारणभए हरिकेस्वरूप सनकसनंदनसन

दक्षकी बेटी धर्मकी स्त्री मूर्ति तामें नरनारायण भगवान् भये बडो है तपको प्रभाव जाको जिनके पास इंद्रकी भेजी उरवसी उरवसी ते आदि अ
पसरा जात भई उरवसी आदि अपसरान को देखि नारायणको व्रत भंग न करि सकी ६ आस्रो नारायणसें कामको विजय करिवेवा
रेको धन्हु उरपैहैं ताकों काम करयकरै जो श्रीरुद्रादिक तिनकी रोषयुक्त दृष्टि करि कामको जराय देत परंतु भीतर को धजरावैहैं ताहि न रोक
रायसकैं ओर ताकें निरमल मन में प्रवेश करिवेकों कोप डरपैं तो वाके हृदय में काम फिर कैसें प्रवेश करैं ७ राजा उत्तानपात के समीप सु
रुची जो दूसरी माता ताने ध्रुवजीको वचन बाण न करि जब वेध्यौ तब ध्रुव जी तप करिवेके लीये वन में गये हरि की स्तुती करी तव प्रसीगर्भ

धर्मस्य दक्षदुहितर्यजनिष्ट मूर्त्यां नारायणो नर इति स्वतपःप्रभावः दृष्ट्वात्मनो भगवतो नियमावलोपं देव्यस्त्वनंगपृतना घटि
तुं न शेकुः ६ कामं दहंति कृतिनो ननु रोषदृष्ट्या रोषं दहंतमुत ते न दहंत्यसह्यं सोयं यदंतरमलं प्रविशन्विभेति कामः कथं
नु पुनरस्य मनः श्रयेत ७ विद्धः सपत्न्युदितपत्रिभिरंति राज्ञो बालोपि सन्नुपगतस्तपसे वनानि तस्मा अदाद्ध्रुवग
तिं गृणते प्रसन्नो दिव्याः स्तुवंति मुनयो यदुपर्यधस्तात् ८ यद्वेनमुत्पथगतं द्विजवाक्यवज्रविप्लुष्टपौरुषभगं
निरये पतंतं त्रात्वार्थितो जगति पुत्रपदं च लेभे दुग्धा वसूनि वसुधा सकलानि येन ९ नाभेरसावृषभ आस सुदेवसू
नुर्यो वै चचार समदृग्जडयोगचर्यां यत्पारमहंस्यमृषयः पदमामनंति स्वस्थः प्रशांतकरणः परिमुक्तसंगः १०

नाम हरि प्रगट होइ ध्रुवजीकों ध्रुवगति देत भये राजा गति गति भृग्वादिक और सप्तरिषि बडाई करैहैं ८ राजा पृथु अवतार
भयो तब राजा वेणु कुपेंडी मार्ग में चल्यो तब ब्राह्मणन को शाप रूप वचन सोई भयो वज्र ता करि दग्ध है पौरुष और ऐस्वर्य
जाको सो मर गयो तब ऋषिनने प्रार्थना करी तब वे पुत्र होइ वाको नरकते रक्षा करी और जिनने पृथ्वी में ते सब द्रव्य दुहे ९
नाभ के सुदेवी स्त्री में ऋषभ देव भगवान भये जो समदर्शी जड उन कीसी नाई योग करि नित्य समाधि करि विचरत भये जि
नके परमहंस मारग को ऋषिश्वर बडाई करै हैं ऐसे स्वस्थ स्वरूप में स्थित सांत जाकी इंद्रिय मुक्त संग भये १० श्री कृष्णाय नमः

हे नारद मेरे यज्ञ में भगवान हयग्रीव भए य तपुरुष उज्वल जाकौ वर्ण वेदमय सर्वदेवतामय जाकौ स्वास लेत में नासिका तें वेद लक्षण
वाणी प्रगट भई ११ एक समय भगवान प्रलय समय मैं मनु नें पाये पृथ्वीमय जल जीव समूह कौ आश्रय जो मछरूप प्रलय कौ जल तामें मे
रे मुख तें निकसे जो वेद तिनें लाइ कें प्रलय के जल में विहार करत भये १२ देवता दानवन नें अमृत के लीयें जब क्षीरसमुद्र मथ्यो तब मं
दराचल समुद्र में डूबवे लग्यौ तब कछरूप धरि पर्वत धारण कर्यो ता समै में निद्रा कौ अवसर जानें पायो और पर्वत कौ जो भ्रमण ता करि
दूरि होइ खुजली जाकी ऐसे कछप भये देवतान के भय दूर करिवे वारे भगवान नृसिंह रूप धारण कर्यो भ्रमत हैं भृकुटी और दंष्ट्रा जामें कराल है

सत्रे ममास भगवान् हयशीर्षा थो साक्षात् स यज्ञपुरुषस्तपनीयवर्णः छंदोमयो मखमयोऽखिलदेवतात्मा वाचो बभूवुरुश
तीः श्वसतोस्य नस्तः ११ मत्स्यो युगांतसमये मनुनोपलब्धः क्षौणीमयो निखिलजीवनिकाय केतः विस्रंसितानुरुभये सल
ले मुखान्मे आदाय तत्र विजहार ह वेदमार्गान् १२ क्षीरोदधावमरदानवयूथपानामुन्मथ्नताममृतलब्धय आदिदेवः पृ
ष्ठेन कछपवपुर्विदधार गोत्रं निद्राक्षणोद्रिपरिवर्तकषाणकंडूः १३ त्रैविष्टयोरुभयहा स नृसिंहरूपं कृत्वा भ्रमद्भ्रुकुटिदं
ष्ट्राकरालवक्त्रं दैत्येंद्रमाशु गदयाभिपतंतमारादूरौ निपात्य विददार नखैः स्फुरंतं १४ अंतः सरस्युरुबलेन पदे गृहीतो
ग्राहेण यूथपतिरंबुजहस्त आर्तः आहेदमादिपुरुषाखिललोकनाथ तीर्थश्रवः श्रवणमंगलनामधेय १५ श्रुत्वा
हरिस्तमरणार्थिनमप्रमेयश्चक्रायुधः पतगराजभुजाधिरूढः चक्रेण नक्रवदनं विनिपाट्य तस्माद्धस्ते प्रगृह्य भगवान् कृप
योज्जहार १६

मुख जामें ऐसौ रूप धरि गदा लीये आपत जो हरण्यकस्यप ताहि जंघान पै डारि तरफरातें कौं नखन करि विदीर्ण करत भए १४
और जब भीतर सरोवर में बडे बलवान ग्राह नें पकर्यो जो गजराज सो सूंडि में कमल लैं दीन होइ बोल्यो हे आदिपुरुष हे त्रि
लोकी के नाथ तीर्थ सरीखे पवित्र करिवे वारे जस श्रवण कौं मंगल नाम कीर्तन जाकौ ऐसे जो तुम सो मेरी रक्षा करलेहु १५ हरि
नें जब वाकौ शरणार्थी जान्यौ तब चक्र लैं गरुड पें चढि चक्र सौं वा ग्राह कौं मुख तोर वातें सूंडि पकर भगवान कृपा करि उद्धार करत भये १६

भा॰द्वि एकवामनअवतारभयो सोअदितीकेवेटानमें छोटेयेगुणमेंमोटेजोभगवान् इनलोकनकोंनापतभए वामनरूपधरितीनपैंडकोंमि
१६ सराजावलिपैंतेंसवपृथ्वीलेंलई याचकवन औरावरीनकरिसकेंऐसोजोधर्ममार्गचलैहैं ताकोंप्रभुइनतेंनष्टकरिसकें सोराजावलि
धर्मात्माहोयातें १७ भगवान्केचरणारविंदकेजलकोंशिखापैंधरतोजोराजावलिताकोंफिरहरि देवतानकोंराज्यदेहैंगे यहकछु
अर्थनहीं जोराजाप्रतिज्ञाविनाऔरइछ्यानकरतभयो औरदोपैंडतोभरेतेंहोइगरें एकपैंडकीकसररही तबतीसरोपैंडपूरोकरिवे

ज्यायान्गुणैरवरजोप्यदितेस्सुतानांलोकान्विचक्रमइमान्यदथाधियज्ञः क्ष्मांवामनेनजगृहेत्रिपदच्छलेन
याञ्चामृतेपथिचरन्प्रभुभिर्नचाल्यः १७ नार्थेवलेरयमुरुक्रमपादशौचमापःशिखाधृतवतोविबुधाधिपत्यं
योवैप्रतिश्रुतमृतेनचिकीर्षदन्यदात्मानमंगशिरसाहरयेभिमेने १८ तुभ्यंचनारदभृशंभगवान्विवृद्धभावे
नसाधुपरितुष्टउवाचयोगं ज्ञानंचभागवतमात्मसतत्वदीपंयद्वासुदेवशरणाविदुरंजसैव १९ चक्रंचदिक्ष्व
विहतंदशसुस्वतेजोमन्वंतरेषुमनुवंशधरोविभर्त्ति दुष्टेषुराजसुदमंव्यदधात्स्वकीर्त्तिंसत्येत्रिपृष्टउशतींप्र
थयंश्चरित्रैः धन्वंतरिश्चभगवान्स्वयमेवकीर्त्तिर्नाम्नानृणांपुरुरुजांरुजआशुहंति यज्ञेचभागममृता
युरवावरुंधआयुष्यवेदमनुशास्त्यवतीर्यलोके २०

कोंजोशिरनवायअपनपोअर्पणकरतभए १८ एकहंसअवतारभयोहेनारदतेरेवडोजोभाव ताकरिप्रसन्नहोइ
जिननेभक्तियोगकह्यो औरज्ञानकेप्रकासकेकरिवेवारेतें ऐसोश्रीभागवतकह्यो वासुदेवसरणजेहैंतेवाज्ञानकोंसह
जजानेहैं १९ मन्वंतरावतारकहेहैं मन्वंतरमें मनुवंशकेधरिवेवारेभगवान् चक्रकीभांते अखंडितप्रभावकोंधा
रणकरतभये दुष्टराजानकोंदंडदेतभये औरजिननेंसत्यलोकताईमनोहरकीर्त्तिविस्तारी २० श्रीकृष्णायनमः

एकधन्वंतररूपभगवान्कीर्त्तिरूपहीभयेजोनामलीयेतेवडेरोगीनकोरोगदूरिकरैहैं औरसदाअमरतैं औरयतलेंदैत्यननें
लेकौजोयज्ञमैंभागतातिहप्राप्तिहोतभये औरलोकमैंअवतारलेंआयुर्वेदकोप्रवर्तिकरैहैं २१ एकपरसरामअवतारभयो
जवक्षत्रीविधातानैंवढाए प्रजानकोंनासकरवेलगें ब्रह्मद्रोहीकुमार्गीतेहुगए नरकदुःखभोगवेलायकपृथ्वीकेकंटक
लवपरसरामउदयहोइपैनीमाकीधार असेफरसाकरमारेहैं २२ एकश्रीरामचंद्रअवतारभएहमारेप्रसादकेसन्मुखभर्ता

क्षत्रंक्षयायविधिनोपभृतंमहात्माब्रह्मध्रुगुज्झितपथंनरकार्तिलिप्सु उद्धंत्यसाववनिकंटकमुग्रवीर्यस्त्रिः स
प्तकृत्वउरुधारपरश्वधेन २२ अस्मत्प्रसादसुमुखःकलयाकलेसइक्ष्वाकुवंशअवतीर्यगुरोर्निदेशे तिष्ठ
न्वनंसदयितानुजआविवेशयस्मिन्विरुध्यदशकंधरआर्तिमार्छात् २३ यस्माअदादुदधिरूढभयां
गवेपोमार्गंसपद्यरिपुरंहरवद्दिधक्षो दूरेसुहृन्मथितरोषसुशोणदृष्ट्यातातप्यमानमकरोरगनक्रचक्रः २४

दिकनसहितइक्ष्वाकुवंशमेंअवतारलेंपिताकीआज्ञासोंवनमेंगए सीतालक्ष्मणसहित जिनसोंविरोधकरि
दसशिररावणदुःखकूंप्राप्तभयो तोएकश्रीरामचंद्रसुविष्णुरहैंकैसेंसुखपावैंगो २३ जोश्रीरामवै
रीकोंनगरजारवेजातातिमहादेवकीसीनाईजरायोंचाहैं तिनेंदेषभारेंभयकें अंगजाकेंकांपेंअसोसमुद्रतत्कालमार्गदे
तभयो समुद्रपारजोसीतानारिकोरिभुभित जोऔदसकरस्रीतिअरुण जोदृष्टिताकरिअक्संतजरैहैं ग्राहमत्स्यनकोसमू
हजामेंअसेसमुद्रनेंमार्गदीयों २४

दि
७

एकविरियाँ रावण स्वर्ग में गयो सो ऐरापत हाथीनें वक्षस्थल मैं दांत मारे सो लगतें ही चूर चूर होइ दिशान सों गिरे सो हसदिशा
घोरी होइ गई तिन दिशान कों पालन करिवे वारो रावण वडो गरवीलो सो जब श्री जानकी जी कों हरि लै जाति गो तब लंकामें जाइ
सैंनामें विचरत जो रावण ताके धनुष के टंकार न करि प्रान हरैंगे २५ अब तो न तार श्री कृष्ण अवतार कहैं हैं जब पृथ्वी असुरन कर
त पीड़ा है तिनें तब पृथ्वी के क्लेश दूरि करिवे के लीयें वलदेव सहित जन्म लें वधतें सुंदर स्याम घूघरवारे केश जाके ऐसे स्याम भ
गवान गोवर्द्धनोद्धारणादिक कर्म करैंगे मनुष्यन करि नाहिं लखि यहै [illegible] मार्ग जाको परंतु कर्मन द्वारा जिनकों ऐश्वर्य जानियैं है २६

वक्षस्थलस्पर्शरुग्नमहेंद्रवाहदंतैर्विडंबितककुब्जुष ऊढहासं सद्योऽसुभिः सह विनेष्यति दारहर्तुर्विस्फूर्जितैर्धनुष
उच्चरितोऽधिसैन्ये २५ भूमेः सुरेतरवरूथविमर्दितायाः क्लेशव्ययाय कलया सितकृष्णकेशः जातः करिष्यति ज
नानुपलक्ष्यमार्गः कर्म्माणि चात्ममहिमोपनिबंधनानि २६ तोकेन जीवहरणं यदुलूकिकायास्त्रैमासिकस्य
च पदा शकटोपवृत्तः यद्रिंगतांतरगतेन दिविस्पृशो वा उन्मूलनं त्वितरथार्ज्जुनयोर्न भाव्यं २७ यद्वै व्रजे
व्रजपशून् विषतोयपीतान् पालांस्त्वजीवयदनुग्रहदृष्टिवृष्ट्या तच्छुद्धयेतिविषवीर्यविलोलजिह्वाम
च्चाटयिष्यदुरगं विहरन् ह्रदिन्यां २८

जानैं छै दिन के नें पूतना मारी तीन महीना के नें पाउ सों प्राकटासुर मार्यो जानें स्वर्ग के स्पर्श करिवे वारे यमलार्ज्जुन
वृक्ष बीच में जाइ उलूषल खेंच जड़ मूल तें उखार डारे सो विना ईश्वर एक कर्म कों न तेवनें २७ जो ब्रज में ब्रज के पशु
कालीदह कों जल पीय मरे और ग्वाल करि मरे तिनें अनुग्रह दृष्टि करि जिवावत भए और कालिंदी कों शुद्ध करवे के
लीयें अति विष कों जा में परभाव चंचल जाकी जिह्वा ता काली नाग कों काढ करि ह्रद में तें निकास देतगे २८

हे नारद श्रीकृष्ण के कर्म दिव्य से हैं जो काली ह्रद में रात्रि कौं सोए ता दिन ज्येष्ठ मास में दावाग्नि लगी वन जरवे लग्यो तब व्र
जवासीन की रक्षा कर लई वे अपनी मृत्यु जानतु के परिहरि कौं पराक्रम २९ एक दिन दही के भांडे फोरेंगे तब माता जोई डोरी बांधेगी सो
ई ऊखल न न सोउ गीत व श्रीव्रजरानी जी कौं श्रम देषि पति लैं लैं बंधन में बंधि जाइगे एक दिन जंभाई लेते में सब त्रिलोकी हरि के मुष में दे
षि मन में संकल्प कर और पीछें ज्ञान हू आय गयो ३० एक दिन नंदराज जी कौं वरुण के दूत लें जाइगे तब मरा ते छुडा मेगें और यों
मारकरैं कौं प्रकट करि कैं परवत की कंदरा में छुड़ायेगें एकादशी निशि मैं नाना थोरे रत्न मैं लगे रहे रात्रि कों श्रम करि सोई रहे कोई साधन

तत्कर्म दिव्यमिव यन्निशि निःशयानं दावाग्निना शुचिवने परिदह्यमाने उन्नेष्यति व्रजमतोवधिता न तत्कालं नेत्रे
पिधाय सबलो नधिगम्य वीर्यः २९ गृह्णीत यद्यदुपबंधममुष्य माता शुल्वं सुतस्य न तु तत्तदमुष्य माति यज्जृंभ
तो स्य वदने भुवनानि गोपी संवीक्ष्य शंकितमनाः प्रतिबोधितासीत् ३० नंदं च मोक्ष्यति भयाद्वरुणस्य पाशाद्गो
पान्बिलेषु पिहितान्मयसूनुना च अह्न्यापृतं निशि शयानमतिश्रमेण लोकं विकुंठमुपनेष्यति गोकुलं स्म ३१
गोपैर्मखे प्रतिहते व्रजविप्लवाय देवेऽभिवर्षति पशून्कृपया रिरक्षुः धर्तोच्छिलीध्रमिव सप्तदिनानि सप्तव
र्षो महीध्रमनघैककरे सलीलं ३२ क्रीडन्वने निशि निशाकररश्मिगौर्यां रासोन्मुखः कलपदायतमूर्छि
तेन उद्दीपितस्मररुजां व्रजभृद्वधूनां हर्तुर्हरिष्यति शिरो धनदानुगस्य ३३

वैकुंठ प्राप्ति कौं नहीं जिनकैं तिन गोकुलवासीन कौं वैकुंठ मैं प्राप्ति करैंगे देषो आश्चर्य्य ३१ गोपन नैं जई इंद्र कौ ज
ग्य उडाय दीनो तब व्रजन कौं नास करवे के लीये इंद्र नैं वर्षा करी तब कृपा करि व्रज की रक्षा के लीये सात वर्ष के श्री
कृष्णचंद्र सात दिना ताई गोवर्द्धन परवत कूं एक हाथ पै लीला करि राषेंगे जैसे बालक छत्रा को उठाय लेते हैं ३२ एक
वेर वन मैं रात्रि सुंदर चांदनी करि उज्ज्वल तिन मे रास क्रीडा करत मनोहर जा मैं पद ऐसे गान कर वधी है काम पीडा जिन के
सें स्त्रीन कौं हरवे वारो शंखचूड ताकौ शिर तर लैंहगे ३३

और केसी दयाल तालहरि की जो प्रलंब धेनक वक्र केसी वृषासुर मल्ल कुवलीयापीड हाथी कंस यवन भोंमासुर मिथ्यावासुदेव ते प्रादि दैं
और जो शाल्व द्विविद वल्वल दंतवक्र सातो वैल नग्नजित के और संवर विदूरथ रुक्म जिनमें मुख्य ए सब मरती वेर हरि कों दर्शन क
रि हरि ही कों प्राप्ति भए ३४ और जो कोई युद्ध में वडे जिनकी श्लाघा धनुर्धारी कांबोज मत्स्य कुरु केकय संजय आदिक महाभारथ की लडा
ई में वल भीम जो अर्जुन के मिस करि मारे ते उन हरी के लोक में जाइगे ३५ काल करि युग युग प्रति संकुचित जिनकी बुद्धि थोरी जिनकी
र आरवल जिनकों वेदमार्ग दुर्गम्य याया के लीयें सत्यवती में अवतार लै वेदव्यास भगवान वेदरूपी वृक्ष की शाखा विस्तार करेंगे ३६ आगें

येच प्रलंब खर दर्दुर केश्यरिष्ट मल्लेभ कंस यवनः कुज पौंड्रकाद्याः अन्येच शाल्व कपि वल्वल दंतवक्र सप्तोक्ष शंवर
विदूरथ रुक्मि मुख्याः ३४ ये वा मृधे समिति शालिन आत्त चापाः कांबोज मत्स्य कुरु कैकय संजयाद्याः यास्यंत्यदर्शनमलं व
ल पार्थ भीम व्याजाह्वयेन हरिणा निलयं तदीयं ३५ कालेन मीलित धीयामवमृश्य नृणां स्तोकायुषां स्वनिगमो वत दूरपारः
आविर्हितस्त्वनुयुगं सहि सत्यवत्यां वेदद्रुमं विटपशो विभजिष्यते स्म ३६ देवद्विषां निगमवर्त्मनि निष्ठितानां पूर्भिर्मये
न विहिताभिरदृश्यतूर्भिः लोकान्घ्नतां मति विमोहमति प्रलोभं वेषं विधाय वहुभाष्यत औपधर्म्यं ३७ यर्ह्यालये
ष्वपि षतां न हरेः कथाः स्युः पाषंडिनो द्विजजना वृषला नृदेवाः स्वाहा स्वधा वषडिति स्म गिरो न यत्र शास्ता भवि
ष्यति कलेर्भगवान्युगांते ३८ सर्गे तपोहमृषयो नव ये प्रजेशाः स्थाने च धर्म मख मन्वमरावनीशाः अंते त्वध
र्म हर मन्युवशासुराद्या माया विभूतय इमाः पुरु शक्ति भाजः ३९

असुर जव वेदमार्ग में चलैंगे और मय दैत्य नें वनाई जो पुरी अलख्य तिन कों वैगि तिन करि लोकन कों नाश करत होलेंगे
तव उनकी बुद्धि कों मोह करवे वारो पाखंड भेष धरि वहुत पाखंड धर्म कहैंगे ३७ जव साधुन के घरन में हरिकथा न होइगी
ब्राह्मण पाखंडी होइ जाइगें स्वाहा स्वधा वषट्कार ये वाणी सुनाई न देइगी तव कलियुग के अंत में कल्कि भगवान प्रगट
होहिंगे ३८ सृष्टि समय में ब्रह्मा ऋषि नो ह प्रजापति और पालन समय में धर्म यज्ञ मनु देवता राजा अंत समय में अधर्म
हर सर्प असुरादिक ए सब बहुत शक्ति के रखवे वारे हरि की माया विभूति हैं जैसो समय देखें ते सोई आप ह्वै जायते ३९ कृस्न

हे नारद ऐसो कोन है जो भगवानके चरित्रगनें वडो वुद्धिमान होइ तो पृथ्वी के रेणु के कणका गिनलेइ परि हरि गुनको ई गिनेजाय
नहीं जा विरीया वामनरूप धरि त्रिलोकी नापी तव पादके वेगकरि अतिसय कंपमान सत्यलोककों धारनकरत भये ४० जापरमे
श्वरकों अंत मैं न पाऊं और ये तेरे वडे भैया मुनि एह प्रभुके मायावलको पार नहीं पावे तो और कोई कहा ते पावें जो हजार जाके
मुखऐसो सेस हरिको नित्य न ये गुणगावे हैं परि अवताई पार नहीं पावे तो औरकी कहा गिनती ४१ जाने निष्कपट होइ हरिके
चरणनको आश्रय लीयो है और जीन पै हरिने दया करी तेही दुस्तर हरिकी मायाको तिरे हैं और जानें है ते माया ते गये तिन

विस्नोर्नुवीर्यगणनांकतमोर्हतीतयः पार्थिवान्यपि कविर्विममेरजांसि चस्कंभयःस्वरहसास्खलतात्रिपृष्ठंयस्मा
त्रिसाम्यसदनादुरुकंपयानं ४० नांतंविदाम्यहममीमुनयोग्रजास्ते मायावलस्यपुरुषस्यकुतोपरेये गायन्गु
णान्दशशताननआदिदेवः शेषोधुनापिसमवस्यतिनास्यपारं ४१ एषांसएवभगवान्दययेदनंतः सर्वात्म
नाश्रितपदोयदिनिर्व्यलीकं तेदुस्तरामतितरंतिचदेवमायां नैषांममाहमितिधीःश्वसृगालभक्ष्ये ४२ वेदाहमंग
परमस्यहियोगमायां यूयंभवश्चभगवानथदैत्यवर्य्याः पत्नीमनोःसचमनुश्चतदात्मजाश्चप्राचीनवर्हिर
भुरंगउतध्रुवश्च ४३ इक्ष्वाकुरैलमुचुकुंदविदेहगाधिरघ्वंवरीषसगरागयनाहुषाद्याः मांधात्रलर्कशतधन्व
नुरंतिदेवदेवव्रतोवलिरमूर्त्तरयोदिलीपः ४४

कों यह लक्षण है जो उनकों उन आस्पारकी मिठाई यह देह नामें मेरी यह वुद्धि नहीं ४२ हे नारद परमेश्वरकी मायाकों मैं जा
नूहूं तुम महादेव प्रल्हाद मनुकी स्त्री सतरूपा स्वायंभू मनु के वेटा प्राचीनवर्हि ऋभु ध्रुव एह जानें है ४३ इक्ष्वाकु पु
रूरवा मुचुकुंद जनक विदेही गाधि रघु अंवरीष सगर गय नहुष ते आदि दै मांधाता अलर्क शतधन्वा रंतिदेव
भीष्म वलि अमूर्त्तरय दिलीप एह सव हरिकी योगमाया जानें हैं ४४ सौरभेउ तेजा शिव देवल पिप्पल

दापारस्वत उद्धव पाराशर भूरिसेन वीभीषण हनूमान सुकदेव उपेंद्र पार्थ आर्ष्टिसेन विदुर श्रुतदेव इनतें आदि दैं हरिकी योग
मायाजानैतें ४५ ये परमेश्वरकी माया जानै हैं औरहतरगये औरहरिभक्तिनकेशीलमैंतें शिक्षाजिनकों ऐसेइस्त्रीसूद्रहूणसव
र औरपापीजीव एहू तरजायतें तौ भगवद्रूपमैं हैं मनजिनकौ ते क्यौंनतरैंगे ४६ कैसौ हरिकौ स्वरूप हैं सदासांतहैं अभयहै ज्ञा
नस्वरूप शुद्ध नेरन्यूनताताकौं स्वरूपमैं कहैं कारकसाधनशब्द हू नहीं औरक्रियाफल हू नहीं औरज्याकेसन्मुखठाढीहोतमाया

सोमर्षभुर्लंशिवदेवलपिप्पलादः सारस्वतोद्धवपराशरभूरिषेणः येऽन्येविभीषणहनूमदुपेंद्रदत्तपार्थार्ष्टिषेण
विदुरश्रुतदेववर्या ४५ ते वै विदंत्यतितरंति च देवमायां स्त्रीशूद्रहूणशबरा अपि पापजीवाः यद्यद्भुतक्रमपरा
यणशीलशिक्षास्तिर्यग्जना अपि किमु श्रुतधारणा ये ४६ शश्वत्प्रशांतमभयं प्रतिबोधमात्रं शुद्धं समं सदस
तः परमात्मतत्वं शब्दो न यत्र पुरुकारकवान् क्रियार्थो मायापरैत्यभिमुखे च विलज्जमाना ४७ तद्वै पदं भग
वताः परमस्य पुंसो ब्रह्मेति यद्विदुरजस्रसुखं विशोकं साध्र्यङ्नियम्य यतयो यमकर्तहेतिं जह्युः स्वराडिवनि
पानखनित्रमिंद्रः ४८ सश्रेयसामपि विभुर्भगवान् यतोस्य भावस्वभावविहितस्य सतः प्रसिद्धिः देहे स्वधा
तुविगमेनुविशीर्यमाणे व्योमेव तत्र पुरुषो न विशीर्यते जः ४९

लज्जायुक्तहोइ दूरसरकजाहैं ४७ सोयह भगवानकौ स्वरूप हैं जाकौं नित्यसुखरूप विशोक मुनिजन कहैं जामें मनास्थित करि
कें नेरदूरि करिवेकौं साधन त्यागैहैं जवताई हरिमैं मन लगैं तवताई साधनकौं परिश्रम हैं जैसें कोई दरिद्री फावरे कूदार कव
ताई धारण करैं जवताई धारण करैं जवताई समाद्धि न होइ और जव आपही इंद्र होइ तव तव सव वातें छोड देई ऐसें हरिमा
मिलयेपैं कोई साधन नहीं चहीयें ४८ सोई भगवान सव फलनके दाता बालरणादिकनके स्वभाव करि कीये जो कर्म ताकी
सिद्धी जानैहैं देहके आरंभ धातुनके वियोग भयेसंते जो आकाससौसी नाहीन हनही होहैं जातैं देहके संग नहीं भयों ४९

हे नारद जो भगवान् विश्व के पालन हारे संक्षेपते मेरे आगें कहे जो कछु कार्य्य कारणादि खोई देखे सो तहरिते न्यारो नहीं और तहरि सबते न्यारो है। हे नारद यह श्री भागवत पुराण जो मोकों श्री नारायण नें कह्यो यह हरि की विभूतीन को संग्रह तें तुं याही विस्तार करि कैं कहि ५१ जैसें वर्णन कर सबी आत्मा सबके आधार श्री हरि में भक्ति होय मन उपजें तैसें सो विचार करि वर्णन करि ५२ जो कोई हरि की माया वर्णन करें अनुमोदन करें श्रद्धा करि नित्य श्रवण करे ताकों आत्मा माया कर मोहित नहो ई ५३ इति श्री भागवते द्वितीय स्कंधे सप्तमोध्याय: ७ राजा परिक्षित पूछे हैं हे ब्रह्मन् देव जी ब्रह्मा नें हरि के गुण कहिवे में जब नारद कों पेर्यो तब नारद नें जो जाके आगें कह्यो सो मेरे आगें कहो १ सोयह मैं जान्यो

सोयं ते विहितस्तात भगवान्विश्वभावन: समासेन हरेर्नान्यदन्यस्मात्सदसच्चयत् ५० इदं भागवतं नाम यन्मे भगवतो
दितं संग्रहोयं विभूतीनां त्वमेतद्विपुलीकुरु ५१ यथा हरौ भगवति नृणां भक्तिर्भविष्यति सर्वात्मन्यखिलाधारे इति संक
ल्प्य वर्णय ५२ मायां वर्णयतोमुष्य ईश्वरस्यानुमोदत: शृण्वत: श्रद्धया नित्यं मायया आत्मा न मुह्यति ५३ इति श्री भागव
ते महापुराणे द्वितीयस्कंधे सप्तमोध्याय: ७ राजोवाच: ब्रह्मणा चोदितो ब्रह्मन्गुणाख्यानेऽगुणस्य च यस्मै यस्मै यथा
प्राह नारदो देवदर्शना १ एतद्वेदितुमिच्छामि तत्त्वं वेदविदां वर हरेरद्भुतवीर्यस्य कथा लोकसुमंगला २ कथयस्व महा
भाग यथाहमखिलात्मनि कृष्णे निवेश्य नि:संगं मनस्त्यक्ष्ये कलेवरं ३ शृण्वत: श्रद्धया नित्यं गृणतश्च स्वचेष्टितं
कालेन नातिदीर्घेण भगवान्विशते हृदि ४ प्रविष्ट: कर्णरंध्रेण स्वानां भावसरोरुहं धुनोति समलं कृष्ण: सलिलस्य
यथा शरत् ५ धौतात्मा पुरुष: कृष्णपादमूलं न मुंचति मुक्तसर्वपरिक्लेश: पांथस्वशरणं यथा: ६

चाहूं हूं हे तत्त्व वेतान में श्रेष्ठ जो कौतौ को कहो अद्भुत वीर्य हरि की कथा लोकन कूं मंगल देवे वारी हैं २ हे महाभाग ऐसे प्रकार कहो जो में श्री कृष्णचंद्र में मन लगाय या सरीर कों त्याग करें ३ जो कोई श्रद्धा करि हरि लीला सुनें हैं कहे हैं ताके हृदय में थोरे ही दिनन में भगवान प्रवेश करें हैं ४ कर्ण द्वारा अपने भक्तन में हृदय कमल में प्रविष्ट होइ सब मैल कों सरद ऋतु दूर करै हैं ५ जैसें यह पुरुष निष्पाप होइ हैं रागद्वेषादि क्लेश या के दूरि होइ हैं तब यह कृष्ण चरणारविंद कों नहीं छोडे जैसें बहोत दिनन में परदेश ते आयो सो अपने घर कों नहीं बरु धा छोडे है ६

भा॰ द्वि॰ औरमहाभूतसंबंधरहितयहलौकिकआत्मताकोंधातूनकरजोदेहारंभसोविनाहीनिजहोइहै वाकमीदिकमेंकरिहैहैं अकृतुकअवजानेहो
२० जातेकहो ७ औरलोकनकोरचनाकरवेवारोकमलजाकेउदरमेंतेंभयोसोईश्वरहूअपनेप्रमाणअंगनिकरिद्धहोहै जैसेंयहलौकिकपुरुषजित
नीसंख्याथाकेअंगनकीजितनोहीवहहातेंजीवईश्वरमेंकहाविशेषहैसोकहो ८ जाभगवानकेअनुग्रहतें भूतात्माब्रह्माजुनप्राणीनकोंसजेंहैं
औरहरिकीनाभकमलतेंहोइब्रह्माईकेंअनुग्रहकरहरिकोस्वरूपदेषतभयोजैसें सोसवकहो ९ विश्वकीउतपत्तपालनसेजातेंहोहैं सोभग
वानसवकेहृदयमेंविराजवेवारे अपनीमायाछोडिजास्वरूपकरविराजेहैंसोकहो १० भगवानकेअंगनकरिलोकपालनकरिकैं हरी

यतुधातुमतोब्रह्मन्देहारंभोस्यधातुभीः यदृच्छयाहेतुनावाभवंतोजानतेयथा ७ आसीद्यदुदरात्पद्मंलोकसंस्थान
लक्षणं यावानयंवैपुरुषइयत्तावयवैःपृथक् तावानसाविति प्रोक्तः संस्थावयववानिव ८ अजःसृजतिभूतानिभू
तात्मायदनुग्रहात् ददृसेयेनतद्रूपंनाभिपद्मसमुद्भवः ९ सचापियत्रपुरुषोविश्वस्थित्युद्भवाप्ययः मुक्त्वात्मा
मायांमायेशःशेतेसर्वगुहाशयः १० पुरुषावयवैर्लोकाःसपालाःपूर्वकल्पिताः लोकैरमुष्यावयवाःसपालैरितिशुश्रुम
यावान्कल्पोविकल्पोवायथाकालोनुमीयते भूतभव्यभवच्छब्दआयुर्मानंचयत्सतः १२ कालस्यानुगतिर्यातुलक्ष्यतेण्
वीबृहत्यपि यावत्यःकर्मगतयोयादृशीर्द्विजसत्तमः १३ यस्मिन्कर्मसमावायोयथायेनोपगृह्यते गुणानांगुणिनां
चैवपरिणाममभीप्सतां १४

केअंगतें यहसवलिहारेभरवनेसुन्योसोकैसेंहें ११ जोकल्पकोंप्रमाणअवांतरकल्पकों औरजोहोइगयोहोनहारवर्त
मानकालकोंजेसेप्रमाणकरियेहैं औरमनुष्यपितरदेवनानकोंआयुकोंप्रमाणकहो १२ औरजोकालकीगतिछोटी
वडीजितनीकर्मकीगति कर्मप्राप्यस्थाननेंकहो १३ औरसत्वादिकजेगुणतिनकोंपरमाणतें देवादिरूपताहिचाहतजो
जीवतिनकोंकोनकर्मसमुदायकरिकैं अधिकारीदेवादिभावकोंप्रापितहोहैं १४ श्रीराधाकृष्णायनमोनमः हरेनमः॥

पृथ्वीपातालदिशाआकासग्रहनक्षत्रपर्वतनदीसमुद्रद्वीपउनकीउत्पत्ति जेइनमेंरहैं तिनकीउतपत्तिकहीं २५ अंडकोयाकोप्र
माणवाहिरभीतरभेदहैतेकहीं महत्पुरुषनकोंचरित्र वर्णाश्रमकोन्यारेन्यारेस्वभावकरिनिर्द्धार २६ अतिसयआश्चर्यरूपहरि
केअवतारनकोंचरित्रकहीं युगऔरयुगनकोंप्रमाण औरजोयुगयुगमेंसोकहीं २७ मनुष्यजातकोजोसाधारनधर्म औरविशे
षवर्णाश्रमकोंन्यारो औरव्यवहारीराजर्षिनकोधर्म औरआपत्कालकोसवकोंधर्मकहीं २८ औरतत्वनकीसंख्यास्वरूप
कार्य्यद्वारालक्षणकहीं हरिकोंपूजाप्रकार अष्टांगयोगकीविधिकहीं २९ योगेश्वरनकोंअणिमादिकसिद्धि अर्चिरादिगति

मू भूतालककुब्व्योमग्रहनक्षत्रभूभृतां सरितःसमुद्रद्वीपानांसंभवश्चैतदोकसां २५ प्रमाणमंडकोशस्यवा
ह्याभ्यंतरभेदतः महतांचानुचरितंवर्णाश्रमविनिश्चयः २६ अवतारानुचरितंयदाश्चर्यतमंहरेः युगानियुगमा
नंचधर्मोयश्चयुगेयुगे २७ नृणांसाधारणोधर्मःसविशेषश्चयादृशः श्रेणीनांराजर्षीणांचधर्मःकृच्छ्रेषुजीव
तां २८ तत्वानांपरिसंख्यानंलक्षणंहेतुलक्षणं पुरुषाराधनविधिर्योगस्याध्यात्मिकस्यचः २९ योगेश्वरै
श्वर्यगतिर्लिंगभंगस्तुयोगिनां वेदोपदेशोधर्माणामितिहासपुराणयोः ३० संप्लवःसर्वभूतानांविक्रमःप्र
तिसंक्रमः इष्टापूर्तस्यकाम्यानांत्रिवर्गस्यचयोविधिः ३१ यश्चानुशायिनांसर्गःपाषंडस्यचसंभवः आत्मनो
बंधमोक्षौचव्यवस्थानंस्वरूपतः ३२ यथात्मतंत्रोभगवान्विक्रीडत्यात्ममायया विसृज्यवायथामायामा
स्तेसाक्षिवद्विभुः २३

औरलिंगसरीरकोंजैसेंप्रलय वेदऋग्वेदादिकउपवेद आयुर्वेदादिक धर्मशास्त्रइतिहासपुराणइनकोंस्वरूपकहो
सवप्राणीनकीउत्पत्तिपालननाशकहोंकैसेंहोइहैं वेदकस्मार्त्तजोकर्मकरैहैं अग्निहोत्रादिकजेरहैं तिनकीफल
विधिसोकहीं त्रिवर्गकोउपायकहैः ३१ नीलोपाधिजीवनकीजोसृष्टिपाखंडकीउत्पत्ति आत्मकोंबंधमोक्ष औरबंधमोक्षा
तिरिक्तस्वरूपकरिस्थितिसोकहीं ३२ जैसेंस्वतंत्रहरिअपनीमायाकरिक्रीडाकरैहैं औरजैसेंप्रलयमेमायादूरिकरिसाक्षीकीसीना

हे भगवान् मैं आपकी शरण हूं याते जो मैं पूछौं सो मेरे आगे क्रमतें पोंछी सो कहिबेकूं जोग्य हौ २७ या बातकै तुम ज्ञाता हौ जैसें ब्रह्मा ना
रद व्यास या क्रमकरि संप्रदाय श्रीभागवत कौ है सो तुम जानौ हौ जो बडेन के बडेन को सो ताहि पिछलेस्थित तौ है सो तुम हूं ब्रह्मा की सी
नांई प्रमाण हौ २८ और हे ब्रह्मन् मैंनें अन्न सन लीयों है सो तुम चिंता मति करौ मेरे प्राणन ती व्याकुल होत हैं जो तुम्हारे मुखतें
निकसत जो कथामृत ताहि पान करूं हूं याते एक ब्राह्मणकै आशते जो कष्ट होइ सो तौ हु परअवनी मेरे व्याकुलता नहीं या भांत राजा
नें हरिकथानमें प्रेरे जब शुकदेवजी कहत भए २८ पांडुनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षत जो जो पूछत भयो सो भागवत द्वारा क्रमसौं कहिवेकों

सर्वमेतच्च भगवन्पृच्छते मेनुपूर्वशः तत्वतोर्हस्युदाहर्तुं प्रपन्नाय महामुने २७ अत्रप्रमाणं हि भगवान्परमेष्ठी यथा
त्मभूः परेचेतांनुतिष्ठंति पूर्वेषां पूर्वजैः कृतं २५ न मेसवः प्रायंति ब्रह्मन्ननशनादमी पिबतोच्युतपीयूषमन्यत्कु
पिताद्विजात् २६ सूत उवाच सउपामंत्रितो राज्ञा कथायामिति सत्पतेः ब्रह्मरातो भृशंप्रीतो विष्णुरातेन संसदि २७
प्राह भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसंमितं ब्रह्मणे भगवत्प्रोक्तं ब्रह्मकल्प उपागते २८ यद्यत्परीक्षिदृषभः पांडूनामनुपृ
च्छति आनुपूर्व्येण तत्सर्वमाख्यातुमुपचक्रमे २९ इति श्रीभागवते महापुराणे द्वितीय अष्टमोध्यायः ८ श्रीशुक उवाच:
आत्ममायामृतेराजन्परस्यानुभवात्मनः नघटेतार्थसंबंधः स्वप्नद्रष्टुरिवांजसा १ बहुरूप इवाभाति मायया बहुरूप
या रममाणो गुणेष्वस्या ममाहमिति मन्यते २ यर्हि वाव महिम्नि स्वे परस्मिन् कालमाययोः रमेत गतसंमोहस्त्यक्त्वोदा
स्तेतदोभयं ३

प्रारंभ करत भए २९ इति श्रीभागवते द्वितीयस्कंधे अष्टमोध्यायः ८ श्रीशुकदेवजी कहै हैं तामें राजानें पूछी यी या जीवकों देहसं
बंध कैसें सो कहै हैं हरिकी माया विना या जीव अनुभवस्वरूप कौ देहसंबंध नहीं बनै है जैसे स्वप्नद्रष्टा वे गारे को स्वप्न देहकौ संबंध नहीं
बनें १ से सार है माया करि है यह जीव बहुरूपिणी माया करि बहुरूपसौं भासै है या माया के गुणन में रमण कर मैं मेरी असें मानै है २
और जब देहादिकौं मोह छोड काल मायातें परें अपने सर्वाश्रय स्वरूप में है तब अहंममता दोउ छोडि पूर्ण स्वरूप में विराजै है ३॥

या जीव के तत्व ज्ञान के अर्थ भगवान जन ते सो तप करि प्रसन्न होइ चिद्रूप दिखाय भगवान ने चतुःश्लोकी करि ब्रह्मा के आगें कह्यो ४ सो आदि देव जगत के परम गुरू ब्रह्मा अपने कमल पे बैठ सृष्टि करिवे की इच्छा करि देखत भयौ परि सृष्टि करिवे की बुद्धि न प्राप्ति भयो जा करि सृष्टि की रचना होय ५ सो ब्रह्मा सृष्टि की चिंता करत एक दिन जल में तपतप दोउ अक्षर दोवार कहें सो सुनत भयो जो ककार तें सोलहो तकार और इकीस अो पकार है राजन् जा निष्किंचनन को धन कहे है ऐसे सुनि के वक्ता के देखवे के लीये सब दिसा देखी जब तुन देखो तब कमल पे चढि अपनी हित वाइ जान जैसे कोई उपदेस करै तैं मान लेहें ऐसे तप ही मे मन लगावत भयो ७ तब तो अमोघ जाको ज्ञान

आत्मतत्वविशुध्यार्थं यदाह भगवान् ऋतं ब्रह्मणे दर्शयन् रूपमव्यलीकव्रतादृतः ४ स आदिदेवो जगतां परो गुरुः स्वधिष्ण्यमास्थाय सिसृक्षयैक्षत तां नाध्यगच्छद्दृशमत्र संमतां प्रपंचनिर्माणविधिर्यया भवेत् ५ स चिंतयन् द्व्यक्षरमेकदांभस्युपाशृणोद्द्विर्गदितं वचो विभुः स्पर्शेषु यत्षोडशमेकविंशं निष्किंचनानां नृप यद्धनं विदुः ६ निशम्य तद्वक्तृदिदृक्षया दिशो विलोक्य तत्रान्यदपश्यमानः स्वधिष्ण्यमास्थाय विमृश्य तद्धितं तपस्युपादिष्ट इवादधे मनः ७ दिव्यं सहस्राब्दममोघदर्शनो जितानिलात्मा विजितोभयेंद्रियः अतप्यत स्माखिललोकतापनं तपस्तपीयांस्तपतां समाहितः ८ तस्मै स्वलोकं भगवान् सभाजितः संदर्शयामास परं न यत्परं व्यपेतसंक्लेशविमोहसाध्वसं स्वदृष्टवद्भिर्पुरुषैरभिष्टुतं ९ प्रवर्तते यत्र रजस्तमस्तयोः सत्वं च मिश्रं न च कालविक्रमः न यत्र माया किमुतापरे हरेरनुव्रता यत्र सुरासुरार्चिताः १०

जीत्यो है मन जाने जीती है दोउ इंद्री जाने तपस्वीन में श्रेष्ठ ऐसो जो ब्रह्मा सब लोकन को प्रकाश करिवे वारो जो तप ता करि रत भयो सावधान ह्वै कें ८ जब ब्रह्मा ने तप कीयो तब प्रसन्न होइ वाको अपनो वैकुंठ लोक दिखावत भये जा समान और कोई लोक नहीं दूरि भये हें क्लेश मोह भय जामें बडे सुकृती देवता जाकी स्तुति करे हैं ९ जा लोक में न रजोगुण न तमोगुण और दोउन करि मिल्यो सत्व हू नही जहां शुद्ध सत्व है न काल को पराक्रम न माया तो और इन की गिनती हैं जहां देवता असुर जिन्हें पूजे

भा॰ द्वि॰ जो पार्षद स्यामसुंदर कमलसे जिनके नेत्र पीतांबर ओढें सुंदर जिनकी कांति अतिसुकुमार चार जिनके भुजा ओर अंग
२२ मान जो उत्तम मणि तिन जिनमें जडी ऐसी चोकी आभरन हैं जिनके ११ कोई एक मूंगा वैडूर्य कमल कुंद की सी जिनकी कांति ऐसे
से हैं देदीप्यमान हैं कुंडल मुकुट ओर माला जिनकी देदीप्यमान जो विमान पार्षदनके तिनकरि सोभायमान वह लोक है १२
बिजुरी सहित बादरनकी पंक्ति करि जैसे आकास सोभा देहै ऐसे स्त्रीनौं बिजुरी सी पार्षदमें घसरीबे आकाश शरीबो वह लोक है

श्यामावदाताः शतपत्रलोचनाः पिसंगवस्त्राः सुरुचः सुपेशसः सर्वे चतुर्बाहव उन्मिषन्मणिप्रवेकनिष्काभ
रणाः सुवर्चसः ११ प्रवालवैदुर्यमृणालवर्चसः परिस्फुरत्कुंडलमौलमालिनः भ्राजिष्णुभिर्यः परितो विराज
ते लसद्विमानावलिभिर्महात्मनं १२ विद्योतमानः प्रमदोत्तमाद्युभिः सविद्युदभ्रावलिभिर्यथा नभः श्रीर्यत्र रू
पीण्युरुगायपादयोः करोति मानं बहुधाविभूतिभिः १३ प्रेखंश्रिताया कुसुमाकरानुगैर्विगीयमाना प्रियकर्म गायती
ददर्श तत्राखिलसात्वतां पतिं श्रियः पतिं यज्ञपतिं जगत्पतिं १४ सुनंदनंदप्रबलार्हणादिभिः स्वपार्षदाग्रैः प
रिसेवितं विभुं भृत्यप्रसादाभिमुखं दृगासवं प्रसन्नहासारुणलोचनाननं १५

जहां मूर्तिमान् लक्ष्मी नाना वैभवन करि हरि के चरणनकी पूजा करें हैं १३ भ्रमर जाके आगे गावे ऐसी लक्ष्मी आपने
हिंडोलमें गावे हैं तहां भक्तनके पालक लक्ष्मी के पति यज्ञपति जगतके पति तिनि ब्रह्मा देखत भयो १४ सुनंद नंद प्रब
ल अर्हणादिक आपने पार्षदनमें मुख्य तिनकरि सेवित भक्तनके प्रसादको सन्मुख जाकी दृष्टि आसव की सी नाई दीषि
वेवारेनको आनंद देहै प्रसन्न जामें हसन अरुण जामें नेत्र ऐसो है मुखारविंद जाको १५ ॥ ॥ ॥

छत्र टधारण करें हैं सुंदर जाके कुंडल चतुर्भुज पीत जाको वस्त्र वक्षस्थल में लक्ष्मी कर शोभित अर्घ सिंघासन पे बैठे प्रकृत पुरु
ष महातत्व अहंकार औ ग्यारह इंद्री पंच महाभूत पंचतन्मात्रा इन सोलह शक्ति जिनकरि सेवित १६ अपने स्वाभाविक ऐश्वर्यादिक
जे भी नके सदा अन्तहीर हैं तिन करयुक्त जो अपने स्वरूप ही में रमण करे हैं ऐसे जो ईश्वर ताहि ब्रह्मा देखत भयो १७ ता हरि के दर्श
न करि जो आनंद तिन ताकर व्याप्त है अंतःकरण जाको रोमांचित है शरीर जाको प्रेम के नरवर आंसु हैं नेत्रन में जाके ऐसो ब्रह्मा
हरि के चरणन में प्रणाम करत भयो जो हरि पारमहंस्य मार्ग करि पाई ये हैं १८ प्रजानकी सृष्टि में अपनी आज्ञा पालक ब्रह्मा ता

किरीटिनं कुंडलिनं चतुर्भुजं पीताम्बरं लक्षतल क्षितं श्रिया अध्यर्हणीयासनमास्थितं परं वृतं चतुःषोडशपंचशक्ति
भिः १६ युक्तं भगैः स्वैरितरत्र चाध्रुवैः स्व एव धामन् रममाणमीश्वरं तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुतांतरो हृष्यत्तनुः प्रेमभरा
श्रुलोचनः १७ ननाम पादांबुजमस्य विश्वसृक् यत्पारमहंस्येन पथाधिगम्यते तं प्रीयमाणं समुपस्थितं तदा प्रजावि
सर्गे निजशासनार्हणं बभाष ईषत्स्मितशोचिषा गिरा प्रियः प्रियं प्रीतमनाः करे स्पृशन् १९ श्रीभगवानुवाच:
त्वयाहं तोषितः सम्यग्वेदगर्भ सिसृक्षया चिरं भृतेन तपसा दुस्तोषः कूटयोगिनां २० वरं वरय भद्रं ते वरेशं
माभिवांछितं ब्रह्मञ्छ्रेयः परिश्रामः पुंसां मद्दर्शनावधिः २१

हि बाउ देखि प्रसन्न होइ हाथ में हाथ ले कें किंचित मुसिक्यान करि शोभित जो वाणी ता करि अपनो प्रियें जानियह
बोलो १९ हे वेदगर्भ वेद है गर्भ में जाके तें मैं सृजवे की इच्छा करी बहुत काल की यो जो तप ता करि मैं भलें रिझायो
जो मैं कपटी योगीन में नहीं प्रसन्न होहु २० हे ब्रह्मन तेरो कल्याण होहु मैं वर देंन वारेन में श्रेष्ठ हूं चाहे सो वर मांगलें औ
र जो पुरुषन को जवताई मेरो दर्शन होय तव ताई फलन के अर्थ साधन को परिश्रम है मेरे दर्शन पीछें कछू परिश्रम नहीं २१

और जो तैनैं मेरो दर्शन कीयो मेरी कृपा करि सो मेरी इच्छा ही कौ प्रभाव है जो तैंनें तप तप यह मेरो वचन सुनि एकांत में बैठ तप
कीयो २२ सृष्टि के आरंभ में जब तू कार्य विषै मोहित भयो तब मैंनें तप की आज्ञा दई तब मेरे हृदय मैं तप कौं प्राप्त्य हौं २३ तपही
करि मैं या विश्व कूं सृजूं हूं तपही करि ग्रसूं हूं तपही करि पालन करूं हूं मेरी दुस्तिर शक्ति तप ही है २४ हे भगवान् तुम सब प्राणी
न के अध्यक्ष हौ सब के हृदय मैं रहौ हौ अखंड ज्ञान दृष्टि करि सब के हृदय कौं अभिप्राय जानौ हौ २५ हृदय की तुम जानौ हौ

मनीषतानिभावोयंमम लोकावलोकनं यदुपश्रुत्य रहसि चकर्थ परमंतपः २२ प्रत्यादिष्टंमयातत्रत्वयिकर्म
विमोहिते तपमेहृदयंसाक्षात्माहंतपसोनघ २३ सृजामितपसैवेदंग्रसामितपसापुनः विभर्मितपसाविश्वं
वीर्यंमेदुश्चरंतपः २४ ब्रह्मोवाच भगवन्सर्वभूतानामध्यक्षोवस्थितोगुहां वेदह्यप्रतिरुद्धेनप्रज्ञानेनचि
कीर्षितं २५ तथापिनाथमानस्यनाथनाथयनाथितं परावरेयथारूपेजानीयांतेत्वरूपिणः २६ यथात्मना
यायोगेननानाशक्त्युपबृंहितं विलुपंविसृजन्गृह्णन्विभ्रदात्मानमात्मना २७ क्रीडस्यमोघसंकल्पऊर्णनाभि
र्यथोर्णुते तथातद्विषयांधेहिमनीषांमयिमाधव २८ भगवच्छिक्षितमहंकरवाणिह्यतंद्रितः नेहमानःप्रजास
र्गंवध्येयंयदनुग्रहात् २९

तथापि मैं याचना करौं हौं सो मैं जो मागूं सो सब देहु कहा जो अरूप ता तुम्हारे स्थूल सूक्ष्म रूप मैं जानौं सो करौ २६ जैसें अपने
माया योग करि नाना शक्ति न करि बड्यौ है यह विश्व ताहि संहार करत सृजत पालन करत और आपु ही ब्रह्मादि रूप धारण करि जैसें
क्रीडा करौ हौ तैसें तद्विषय मैं बुद्धि देहि २७ जैसैं मकरी जाल कौं सृजै है और वामें विहार करै अपने कूं ढकि लेहै वाकरि ऐसी ही
सृष्टि मैं बुद्धि सो मो विषै धारण करौ २८ हे भगवान् मैं आलस्य छोडि तुम्हारी आज्ञा करौंगो परंतु प्रजा नकी सृष्टि करत तुम्हारे अनुग्रह तें बधूं

ऐसे कोई सखा सखा पै अनुग्रह करै ऐसैं तुम भरि अनुग्रहीत मैं उत्तम मध्यम आदि भेद करि प्रजानकों सृजों यहीं सृष्टि जो तुम्हारी आज्ञा मैं स्थित रहों परंतु मैं अजहूं स्वतंत्र हूं यह मद मोकूं मति देहु ३० तब तहां ब्रह्मा के मोह निवृत्ति के लीयें चतुश्लोकी भागवत कहत भए हे ब्रह्मन् परम गुह्य जो मेरो ज्ञान शास्त्रोक्त विज्ञान जो अनुभव ताकर युक्त रहस्य जो भक्ति ताकर सहित और वाके साधन मैं तेरे आगें कहत हूं ग्रहन करि ३१ जा मैं स्वरूप तें हूं जा भांति करि युक्त और जो मेरे रूप गुण कर्म सो ई सब तत्वज्ञान मेरे

यावत्सखा सख्युरिवेश ते कृतः प्रजाविसर्गे विभजामि भो जनं अविक्लवस्ते परिकर्मणि स्थितो मा मे समुन्नद्धमदोऽजमानिनः ३० श्रीभगवानुवाच ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यं तदंगं च गृहाण गदितं मया ३१ यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः तथैव तत्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ३२ अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परं पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहं ३३ ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तमः ३४

अनुग्रह तें तोकूं होहु ३२ मैं ही या सृष्टि तें पहिलें स्थित हो और कछु स्थूल सूक्ष्म प्रधान नहीं प्रधान हू मो ही मैं लीन हो और सृष्टि तें पीछें हूं मैं ही होत भयो और जो यह विश्व सो उ मैं ही हों प्रलय मैं जो परहै सो उ मैं ही हों अनादि अनंत अद्वितीय हूं ता तें परिपूर्ण हूं ३३ अब माया कों निरूपण करै हैं वास्तव अर्थ विना जो आत्म मैं प्रतीत होइ और है और न प्रतीत होय सो यह मेरी माया जान जैसें दोय चंद्रमा नहीं हैं और प्रतीत हैं जैसें राहु ग्रह मंडल मैं स्थित है और नहीं दिखाई देहैं ऐसें ही संसार नहीं और प्रतीति

भा॰ द्वि॰ जैसें पंचमहाभूत सबऊंचेनीचेप्राणीनमें सृष्टितेपीछें प्रविष्टहैं क्योंऔरनमेंदेषियेंतें और नहीं हू प्रविष्टहैं पहिलेंहीकारणतारि
२४ करप्राणीनमें अविद्यमाननतें यातें तैसोईमेंहूं भौतिकनमें हूं और नहीं ऐसी मेरी सत्ताहैं ३५ आत्माकेस्वरूपकोंजोजान्योचाहें ताकोंयह
हीविचारवेकोंजोग्यहैं सबमें अनुस्यूत औरसबतेंव्यतिरेककरिजोसबठौरसबकालमेंहैं सोईआत्मा ३६ हेब्रह्माजी चित्तएकाग्रकरि
यामतमें स्थितजोहोउगेतौं कल्पनकेजोनानासृष्टितिनमेंहू मोहकूनप्राप्तहोयगे जोमेंकरताहूं यहअभिनिवेशनहोइगो ३७
हेराजन् ऐसेंअजन्माभगवान्सबनकेअधिपतिब्रह्माताहि ऐसेंकहि अपनेरूपकोंअंतरहितकरतभये ३८ अंतरहितकीनोहैअप

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहं ३५ एतावदेव जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनात्म
नः अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ३६ एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्य
ति कर्हिचित् ३७ श्रीशुक उवाच: संप्रदिश्यैवमजनो जनानां परमेष्ठिनं पश्यतस्तस्य तद्रूपमात्मनो न्यरुणद्धरिः ३८
त अन्तर्हितेन्द्रियार्थाय हरये विहिताञ्जलिः सर्वभूतमयो विश्वं ससर्जेदं स पूर्ववत् ३९ प्रजापतिर्धर्मपतिरेकदा निय
मान्यमान् भद्रं प्रजानामन्विच्छन्नातिष्ठत्स्वार्थकाम्यया ४० तं नारदः प्रियतमो रिक्थादानामनुव्रतः शुश्रूषमाणः शीलेन
प्रश्रयेण दमेन च ४१ मायां विदित्सन्विष्णोर्मायेशस्य महामुनिः महाभागवतो राजन्पितरं पर्यतोषयत् ४२ कृष्णायनमः

नोस्वरूपजानें ऐसेंतारेकें अर्थब्रह्माहाथजोरिपहिलेंकीसीनांईयाविश्वकोंसृजतभये ३९ तापीछें ब्रह्मानेंश्रीभागवतनारदकेआ
गेंकह्यो सोईकहतहैं प्रजानकेपति धर्मकेपति ब्रह्माएककदिना प्रजानकेकल्याणकेलीयें अपनीसृष्टिकीइच्छाकरिनियमनमेंस्थित
होतभए ४० ताब्रह्माकेपुत्रनमेंबहुतप्यारे अनुरागी श्रीनारदजी शीलनम्रता अनुरागकरिपिताकीसेवाकरतभए ४१ मायाके
प्रभुईशजोभगवान्विष्णुताकीमायाजान्योचाहेंहैं ताकेलीयेंपरमभागवतनारदजूपिताकोंप्रसन्नकरतभए ४२ श्रीकृष्णाय:

२५

सब लोकनके बडे ब्रह्मा अपने पिता तिन्हैं प्रसन्न देषि नारदजी यह पूछत भये जो राजा तैंनें मोहि पूछ्यो ४३ जब वा नारदके अर्थ ब्र
ब्रह्मा दशा जामें लक्षण ऐसो श्रीभागवत पुराण प्रसन्न होइ कहत भयो जो नारायणनें ब्रह्मा के आगें कह्यो ४४ नारदजी आयकें स
रस्वती के तट पर ब्रह्म को ध्यान करत जो व्यास मुनि ताके आगें कहत भये ४५ व्यासजीनें मोकों कह्यो अब तुमनें मोहि पूछ्यो जो विरा
टतें यह विश्व जैसें भयो सो कहूंगो और तुम प्रश्नते आगें कहूंगो ४६ इति श्रीभागवते द्वितीयस्कंधे नवमोऽध्यायः ९ दस जामें लक्षण सो
महापुराण पांच लक्षण जामें सो पुराण श्रीभागवत महापुराण ताके दश लक्षण कहै हैं यामें सर्ग विसर्ग स्थान पोषण ऊति मन्व

तुष्टं निसाम्य पितरं लोकानां प्रपितामहं देवर्षिः परिपप्रछ भवान्यन्मानुपृच्छति ४३ तस्मा इदं भागवतं पुराणं दशलक्ष
णं प्रोक्तं भगवता प्राह प्रीतः पुत्राय भूतकृत् ४४ नारदः प्राह मुनये सरस्वत्यास्तटे नृप ध्यायते ब्रह्म परमं व्यासायामितते
जसे ४५ यदुताहं त्वया पृष्टो वैराजात्पुरुषादिदं यथासीत्तदुपाख्यास्ये प्रश्नानन्यांश्च कृत्स्नशः ४६ इति श्रीभागवते महा
पुराणे द्वितीयस्कंधे नवमोऽध्यायः ९ श्रीशुक उवाचः अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः मन्वंतरेशानुकथा निरोधो
मुक्तिराश्रयः १ दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणं वर्णयंति महात्मानाः श्रुतेनार्थेन चांजसा २ भूतमात्रेंद्रियधि
यां जन्म सर्ग उदाहृतः ब्रह्मणो गुणवैषम्याद्विसर्गः पौरुषः स्मृतः ३

न्तर ईसकथा निरोध मुक्ति आश्रय ये दश लक्षण हैं १ दशमों जो आश्रय ताकी शुद्ध तत्त्वज्ञान ताके लीयें स्तुति करि स्तुतिन विषै नौन
को लक्षण कवीश्वर वर्णन करें हैं तात्पर्य श्रुताश्रये जो वृत्ति कथिता ता आख्यानन मैं आत्म निरूपणतें ही कहीये हैं २ महाभूत शब्दादिक तत
न्मात्रा पांच इंद्रिय महतत्त्व अहंकार इनकी गुणनके परणामतें जो परमेश्वरतें जन्म सो सर्ग कहीयें और जो ब्रह्मातें स्थावर जंगमन की सृष्टि
सो विसर्ग कहीयें हैं ॥३॥

वैकुंठभगवानकोविजयसजेनकीमर्यादापालनकरउत्कर्षसोस्थितकहीये अपनेभक्तनपैजोवाकोअनुग्रहसोपोषनकहियें हरिकरिअनुग्रहीतसाधुमन्वंतरनकोअधिपतिनकोधर्मवतीमन्वंतर औरजेकर्मनकरबंधेउतेते ति ४ हरिकेअवतारनको चरित्रऔरनानाआख्यानकरिबढेभक्तनकेचरित्रतेईशानकथाकहीयें ५ हरिकीयोगनिद्राकेपीछैंयाजीवकोउपाधिनक रिसहितहरिमेंसयन यहलयनिरोधकहावें औरकर्तृत्वादिरूपछोडिकेंब्रह्मतानकरिस्थितयहमुक्तिकहावे ६ औरजातें

स्थितीर्वैकुंठविजयःपोषणंतदनुग्रहः मन्वंतराणिसधर्मऊतयःकर्मवासनाः ४ अवतारानचरितंहरे
रस्यानुवर्तिनां पुंसामीसकथाप्रोक्ताःनानाख्यानोपबृंहिताः ५ निरोधोस्यानुसयनामात्मनःसहशक्तिभिः
मुक्तिर्हित्वान्यथारूपंस्वरूपेणविवस्थिती ६ आभासश्चनिरोधश्चयतश्चाध्यवसीयते सआश्रयःपरंब्रह्म
परमात्मेतिशब्द्यते ७ योध्यात्मकोयंपुरुषःसोसावेवाधिदैविकः यस्तत्रोभयविच्छेदःसस्मृतोह्याधिभौतिकः ८
एकमेकतराभावेयदानोपलभामहे त्रितयंतत्रयोवेदसआत्मास्वाश्रयाश्रयः ९

सृष्टिलयहोतहैं औरजोवहप्रकासकहैसोवहपरब्रह्मपरमात्माआश्रयकहीयेहैं ७ जोयहअध्यात्मिकपुरुषचक्षुरादिइंद्रीयनको अभिमानीदृष्टाजीवसोईअधिदैविकहैं चक्षुरादिकनकोअधिष्ठातासूर्यादिरूपहैं औरजोएकतीमेंउभयरूपहोहैं विच्छेद सोअधिभूतकहेहैं चक्षुगोलकादिकरउपलक्षितादृष्यदेहहै ८ इनतीन्योनकीपरस्परसापेक्षसिद्धितैं एककेअभावमेंएकनहीपाईहैं औरजोइनतीन्योनकूसाक्षीताजानेंसोवहपरमात्मावहकाहूकेआश्रयनहीं औरसबकोआश्रयहैं ९ श्रीकृष्णायनमः ॥

अव सृष्टि प्रकार कहैं हैं पुरुष भगवान् या अंड कौं पृथक करि स्थित भये जब तब अपनें स्थान विचारत रहे वे कौंण पवित्र जैं ... और
कहैं से हा जिन की जिनें सृजत भये १० ते अपनें सृजे जे जल तिन में सहस्र वर्ष बसत भये ताही कर नारायण नाम भयौ जो जल हरि तें भ
ए तिन की नर संज्ञा है और हरि सें उन में वास कियौ ताते नारायण कहात हैं ११ द्रव्य कर्म काल स्वभाव जीव ये जाकै अनुग्रह तें कार्य में सम
र्थ होत हैं और जाकी उपेक्षा करि नहीं होत हैं १२ प्रलय में सब जीवन कौं अपने में लीन करि एक रहत हैं अव फिर जब नाना प्रकार होइवे की इच्छा करी

पुरुषोऽडं विनिर्भिद्य यदासैस विनिर्गतः आत्मनोयनमन्विछन्नयोऽस्राक्षीच्छुचिः शुची १० तास्ववात्सीत्स्वसृष्टा
सुसहस्रपरिवत्सरान् तेन नारायणो नाम यदापः पुरुषोद्भवाः ११ द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च यद
नुग्रहतः संति न संति यदुपेक्षया १२ एको नानात्वमन्विछन्योगतल्पात्समुत्थितः वीर्यं हिरण्मयं देवो माय
या व्यसृजत्त्रिधा अधिदैवमथाध्यात्ममधिभूतमिति प्रभुः १३ अथैकं पौरुषं वीर्यं त्रिधाभिद्यत तच्छृणु
अंतः शरीर आकाशात् पुरुषस्य विचेष्टितः ओजः सहो वलं जज्ञे ततः प्राणो महानसु १५ अनुप्राणंति यं
प्राणाः प्राणंतं सर्वजंतुषु अपानंतमपानंति नरदेवमिवानुगाः १६

जब जीवन की सृष्टि के लीयें योग सेज्या पैं तें उठि गर्भ जो हेम प्रकाश वहु न ताहि माया करि तीन प्रकार सृजत भए १३ अ
धिदैव अध्यात्म और अधिभूत और भगवान को तत्व सम्बन्ध रूप जो वीर्य सो तीन प्रकार कौं भयौ सो सुनौं १४ ताहि कि
या शक्ति करि त्रिविधि चेष्टा करत जो पुरुष ताके अंतः शरीर में जो आकाश ताते ओज सह बल एक भए ताते सूक्ष्म प्राण वाते
महाप्राण भयौ छत्य सबन कौं प्राण १५ जो चेष्टा करत जो सूक्ष्म प्राण ता के पीछें इंद्री चेष्टा करै है और जब यह चेष्टा त्याग हैं तब

ना॰ द्वि॰ प्राणनिमित्तदेत्ताकरिकें पारासकोभूख प्यासहोइआई तबखानपानकीइछाभई तबपहलेंमुखभयो १७ मुखतेपीछें तालूओभयो
२६ तामेंजिह्वाहोइआई फिरनानाभांतकोरसभयो जोजिह्वाकरजानियेंहें १८ जबभूमापुरुषकेबोलवेकीइछाभई तबमुखतेंअग्नि
देवतावाकइंद्रीभई तिनइंद्रीयदेवतादोउनकरिभाषणहोहें जलमेंवहोतकालताकोंनिरोधहोतभयो १९ जबप्राणवायु
असंतचलवेलगी तबदोनासिकाछिद्रभये तहांगंधकोग्रहणकरीवाहतजोपुरुषताको गंधकोप्रापितकरिवेवारोपवनदेव
ताभयो घ्राणइंद्रीयगंधविषय २० जबप्रकासशून्यभयो आरआपनीदेहवस्तुसबकोदेखिवेकीइछाकरतभयो तबदोनेत्रभए

प्राणेनाक्षिपताक्षुत्तृडंतराजायतेप्रभोः पिपासतोजक्षतश्चप्राङ्मुखंनिरभिद्यत १७ मुखतस्तालुनिर्भिन्नंजि
ह्वातत्रोपजायते ततोनानारसोजज्ञेजिह्वयायोधिगम्यते १८ विवक्षोर्मुखतोभूम्नोवह्निर्वाग्व्याहृतंतयोः जलेचै
तस्यसुचिरंनिरोधःसमजायत १९ नासिकेनिरभिद्येतांदोधूयतिनभस्वति तत्रवायुर्गंधवहोघ्राणोनसिजिघृक्षतः
यदात्मनिनिरालोकमात्मानंचदिदृक्षतः निर्भिन्नेह्यक्षिणीतस्यज्योतिश्चक्षुर्गुणग्रहः २१ बोध्यमानस्यऋषिभिरा
त्मनस्तज्जिघृक्षतः कर्णौचनिरभिद्येतांदिशःश्रोत्रंगुणग्रहः २२ वस्तुनोमृदुकाठिन्यलघुगुर्वोष्णशीततां जिघृक्ष
तस्त्वङ्निर्भिन्नातस्यांरोममहीरुहाः २३ तत्रचांतर्बहिर्वातस्त्वचालब्धगुणोवृतः हस्तौरुरुहतुस्तस्यनानाकर्मचिकीर्षया २४

तहांसूर्यदेवताभयो चक्षुइंद्रीरूपकोग्रहणकरवेवारी २१ ऋषिश्वरवेदकवस्तुतिप्रबोधकरिवेलगे तबसुन्योचाहतजोपुरुषताकें
कर्णहोइआए दिशाउहांकेदेवताभयें श्रवणइंद्रीभई जाकरशब्दकोंग्रहणकरैहैं २२ वस्तुकीकोमलताकठोरताहलकीभारी
तातीसीरीइतज्ञानकेकीइछाभई तबत्वाचाइंद्रीभई तामेंरोमईद्रीवृक्षदेवताभये २३ तात्वचामेंभीतरबाहरप्राणकरि
स्थितहैं त्वचालीकरपायोहेस्पर्शजानें नानाकर्मकरिवेकीजबइछाभई तबहाथहोइआये: २४ श्रीकृष्णायननमोनमः।।

तिनकौ बलवान इंद्र देवता भयो कर्मइंद्रीय देवता दोउ नकरतो हैं २५ आभिषगति जाइवेकी इछा भई तब पाउ होत भए उन पाउन सौ
करि मनुष्य यज्ञकी द्रव्य लावै हैं हव्य सिद्धि करै हैं २६ पुत्र और रति और सर्गादिक इनकौ चाहत जो पुरुष ता तें शिश्न भयो अधिष्ठान उपस्थ
इंद्रिय भई प्रजापति देवता स्त्री संभोग संबंधी सुख वे इंद्रीय देवता दोउ न करितो हैं २७ अन्न जो अन्नादिक तिनके असारो स छोडिवेकी जब
इछा भई तब गुदा भई पायु इंद्री मित्र देवता मलत्याग इंद्रीय देवता दोउ न करितो हैं २८ देह ते देहांतर में जब आयवेकी इछा भई तब नाभि नाभि
द्वार भयो ता तें अपान इंद्री मृत्यु देवता सो नाभि ही में प्राण अपान की गांठ खुलें पैं मृत्यु हो हैं २९ अन्नपानन की सेग्रह जाकें इछा भई ता पुरुष कें कुक्ष

तयोस्तु बलवानिंद्रा आदानमुभयाश्रतं २५ गतिं जिगीषतः पादौ रुरुधातेभिकामिकां पद्भ्यां यज्ञः स्वयं हव्यं कर्मभिः क्रियते नृभिः २६
निरभिद्यत शिश्नो वै प्रजानां दामृतार्थिनः उपस्थ आसीत्कामानां प्रियं तदुभयाश्रयं २७ उत्सिसृक्षोर्धातुमलं निरभिद्यत वै गुदं
ततः पायुस्ततो मित्र उत्सर्ग उभयाश्रयः २८ आसिसृप्सोः पुरः पुर्या नाभिद्वारमपानतः तत्रापानस्ततो मृत्युः पृथक्त्वमुभयाश्रयं २९
आदित्सोरन्नपानानामासन् कुक्ष्यंत्रनाडयः नद्यः समुद्राश्च तयोस्तुष्टिः पुष्टिस्तदाश्रये ३० निदिध्यासोरात्ममायां हृदयं निर
भिद्यत ततो मनस्ततश्चंद्रः संकल्पः काम एव च ३१ त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्थिधातवः भूम्यप्तेजोमयाः सप्त प्राणो व्योमां
बुवायुभिः ३२ गुणात्मकानींद्रियाणि भूतादिप्रभवा गुणाः मनः सर्वविकारात्मा बुद्धिर्विज्ञानरूपिणी ३३ एतद्भगवतो रूपं स्थूलं ते
व्याहृतं मया मह्यादिभिश्चावरणैरष्टभिर्बहिरावृतम् ३४

नाडी आंतें होत भई नदी समुद्र उ तांके देवता तुष्टि पुष्टि इंद्रीय देवता दोउ न तें होहैं ३० अपनी माया चिंतन मन करवेकी जब इछा भई तब
हृदय में तें भये चंद्रमा देवता भयो ता मन में संकल्प अभिलाष होत भए ३१ त्वक् चर्म मांस रुधिर मेद मज्जा अस्थि ए सातें धातु पृथ्वी
जल तेज मय हैं प्राण तें आकास जल पवन मय हैं ३२ सब इंद्री विषयाभिमुख भाव हैं शब्दादि गुण अहंकार तें भए हैं और मन सब वि
कारनकौ स्वरूप हैं बुद्धि विज्ञान स्वरूपिणी हैं ३३ यह भगवान कौ स्थूल रूप हैं मैं तेरे आगें कह्यो पृथ्वी तें आदि दें आठ चरण करि बाहिर तें व्याप्त हैं ३४

तातेंपरेंस्थूलकौकारणमूलइंद्रियनकेंअगोचरअव्यक्तनिर्विशेष ऐसोंसूक्ष्मरूपतें जाकोंआदिमध्यअंतनहीं सदाएकरूपवाणीमनतेंपरेंऐ
सोहे ३५ येदोउस्थूलसूक्ष्मरूप मैनेंतेरेआगेंवर्णनकरे तिनेंविवेकीवास्तवतैंनहींग्रहीकारकरेहैं जातेंमायाकेसृजेंहैं ३६ सोईभगवान्
ब्रह्मरूपकेधरवेवारेवाचकतौनामसृजेहैं औरवाच्यताकरिरूपक्रियानिनेंसृजेतें जोमायाकरिअपारहैं औरवास्तवतैंअकर्मतें ३७ सो
ईभगवान्प्रजापतिमनुदेवताऋषिपितरसिद्धिचारणगंधर्वविद्याधरअसुरगुह्यकइनैंसृजतभयो ३८ किंनरअप्सरानागसर्पकिंपुरुष
उरगमातगणराक्षसपिसाचप्रेतभूतविनायकइनैंसृजतभए ३९ कूष्मांडउन्मादवेतालयातुधानग्रहखगमृगपशुवृक्षपर्वतजंगमइन

अतःपरंसूक्ष्मतमम्अव्यक्तंनिर्विशेषणं अनादिमध्यनिधनंनित्यंवाङ्मनसःपरं ३५ अमुनीभगवद्रूपेमयातेअनुवर्णिते उभे
अपिनगृह्णंतिमायासृष्टेविपश्चितः ३६ सवाच्यवाचकतयाभगवान्ब्रह्मरूपधृक् नामरूपक्रियाधत्तेसकर्माकर्मकःपरः ३७
प्रजापतीन्मनून्देवान्ऋषीन्पितृगणान्पृथक् सिद्धचारणगंधर्वान्विद्याधरासुरगुह्यकान् किंनराप्सरसोनागान्
सर्पान्किंपुरुषोरगान् मातृरक्षःपिसाचांश्चप्रेतभूतविनायकान् कूष्मांडोन्मादवेतालान्यातुधानग्रहानपि खगा
न्मृगान्पशून्वृक्षान्गिरीन्नृपसरीसृपान् ४० द्विविधाश्चतुर्विधायेन्येजलस्थलनभौकसः कुशलाकुशलामिश्राः
कर्मणांगतयोस्त्विमाः ४१ सत्वंरजस्तमइतितिस्रःसुरनृनारकाः तत्राप्येकैकशोराजन्भिद्यंतेगतयस्त्रिधा ४२ यदैवैत
तरोऽन्योन्यंस्वभावउपहन्यते सएवेदंजगद्धाताभगवान्धर्मरूपधृक् पुष्णातिस्थापयन्विश्वंतिर्यङ्नरसुरात्मभिः ४३
ततःकालाग्निरुद्रात्मायत्सृष्टमिदमात्मनः संनियच्छतिकालेनघनानीकमिवानिलः ४४

सवनकौसृजतभये ४० स्थावरजंगमस्वेदजअंडजउद्भिज्जजरायुजजलवासीआकासवासीउत्तममध्यमअधमयेकर्मकेगति
हैं कर्मजैसोकरैंतैसोईसोजोनपावे एसववाकेरचेहैं ४१ सत्वकरिदेवताहोतेंरजोगुणकरिमनुष्यतमोगुणकरिनरकीहोतेंतामेंएक
गतितीनतीनभेदकौंप्राप्तिहोतेंहैं जोएकगुणसत्वहैओररजकरिविधितें ऐसेंभेदकौंप्राप्तिहोतेहैं ४२ सोभगवान्धर्मरूपकेधर
वेवारेतीर्यकमनुष्यदेवतानमेंअवतारलैविश्वकौंपालनकरैंहैं ४३ प्रलयसमैमेंकालाग्निरुद्रस्वरूपहोइ याअपनीसृजी
विश्वकौंसंहारकरैहैं जैसेंपवनमेघनकेसमूहकुंउडावेहैं ४४ श्रीकृष्णायनमोनमः हरेकृष्णायनमोनमः॥ ॥ ॥

हेराजन् ऐसैंसप्तधादिरूपकरिभगवान्वर्णनकरैं परंतुजेकोईशुद्धिनकिवारेसबारूपकरनहीनजें वैकुंठादिलोकमेंपार्षदनकरि
सहतविहारकरतजीतहरितिनैभजेंहैं ४५ याविश्वकेजन्मादिकनमेंपरमेश्वरकोईकर्तृत्वनही परंतुकर्तृत्वप्रतिषेधकेलीयेंमायाकरआ
रोपितहैं ४६ यहब्रह्माकोमहाकल्प अवांतरकल्पसहितमैंनेरेआगेंकह्यो जिनमेंऔरकल्पकेसमानविधिहैं औरमहदादिकनकल्पमें महा
सर्गअवांतरकथाचरणकोसर्गहै ४७ अवकालकोप्रमाण औरकल्पकोलक्षणस्वरूपतहीयस्कंधमेंआगेंकहैं यापद्मकल्पकोसुनि ४८
सौनकसूतजीसोकहैंहैं हेसूतजीजबदुस्त्याजभैयावंधुनकोंछोडिविदुरजीपृथ्वीकेतीर्थनमेंविचरतभेमैत्रेयजीसोंपूछनभए

इत्थंभावेनकथितोभगवान्भगवत्तमः नेत्थंभावेनहिपरंद्रष्टुमर्हंतिसूरयः ४५ नास्यकर्मणिजन्मादौपरस्यानुविधीयते
कर्तृत्वप्रतिषेधार्थंमाययारोपितंहितत् ४६ अयंतुब्रह्मणःकल्पःसविकल्पउदाहृतः विधिःसाधारणोयत्रसर्गाःप्राकृत
वैकृताः ४७ परमाणंचकालस्यकल्पलक्षणविग्रहं यथापुरस्ताद्व्याख्यास्येपाद्मंकल्पमथोशृणु ४८ शौनकउवाच
यदाहभगवान्सूतसत्ताभागवतोत्तमः चचारतीर्थानिभुवःत्यक्त्वाबंधून्सुदुस्त्यजान् ४९ कुत्रकौषारवेस्तस्यसंवा
दोऽध्यात्मसंश्रितः यद्वासभगवांस्तस्मैपृष्टस्तत्त्वमुवाचह ५० ब्रूहिनस्तदिदंसौम्यविदुरस्यविचेष्टितं बंधुत्यागनि
मित्तंचयथैवागतवान्पुनः ५१ सूतउवाच राज्ञापरीक्षितापृष्टोयदवोचन्महामुनिः तद्वोऽभिधास्येशृणुतराज्ञःप्रश्ना
नुसारतः ५२ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेपरमहंस्यांसंहितायांवैयासिक्यांज्ञानवैराग्यदायनीद्वितियस्कंधेनामदशमोध्यायः १०

सोकहो ४९ तामैत्रेयविदुरकोज्ञानयुक्तसंवादकोनसेस्थानमेंभयो औरपूछेजोमैत्रेयसोविदुरजीकेआगेंकहातत्वकहतभए ५०
सोविदुरजीकेचरित्रहमारेआगेंकहो कैसेभैयावंधुछोडिकैगए कैसैंफिरहस्तनापुरमेंआये ५१ तैसौनकहोयहीवातराजा
परिक्षितनैश्रीशुकदेवजीसोंपूछीसोशुकदेवजीनैंकही राजाकेप्रश्नकेअनुसारसोईमैतुम्हारेंआगेंकहूंगो ५२ इतिश्रीभ
गवतेमहापुराणेपरमहंस्यांसंहितायांवैयासिक्यांज्ञानवैराग्यदायनीदुतीयस्कंधेभावार्थदीपकायांनामदशमोध्यायः १० समाप्तः॥